श्री शांतिनाथ विधान

आशीर्वाद

गणाधिपति गणधराचार्य श्री कुन्थुसागरजी गुरुदेव

वैज्ञानिक धर्माचार्य श्री कनकनंदीजी गुरुदेव

आशीर्वाद एवं संपादन

आर्ष मार्ग संरक्षक, कविहृदय, प्रज्ञायोगी

दिगम्बर जैनाचार्य श्री गुप्तिनंदीजी गुरुदेव

रचनाकार

मुनि श्री चन्द्रगुप्तजी

एवं

गणिनी आर्यिका राजश्री माताजी

प्रकाशक :

श्री धर्मतीर्थ प्रकाशन

कचनेर (गट नं. 11-12) औरंगाबाद (महाराष्ट्र)

Email : dharamrajshree@gmail.com

पुस्तक का नाम	:	श्री शांतिनाथ विधान
आशीर्वाद	:	गणाधिपति गणधराचार्य श्री कुन्थुसागरजी गुरुदेव वैज्ञानिक धर्माचार्य श्री कनकनंदीजी गुरुदेव
संपादन एवं आशीर्वाद	:	आर्षमार्ग संरक्षक प्रज्ञायोगी दिगम्बर जैनाचार्यश्री गुप्तिनंदीजी गुरुदेव
सहयोग	:	मुनि श्री महिमासागरजी
संयोजन	:	मुनि श्री सुयशगुप्तजी
रचनाकार	:	मुनि श्री चन्द्रगुप्तजी गणिनी आर्यिका राजश्री माताजी
सहयोगी	:	गणिनी आर्यिका क्षमाश्री माताजी आर्यिका आस्थाश्री माताजी, क्षुल्लिका धन्यश्री माताजी
सर्वाधिकार सुरक्षित	:	रचनाकाराधीन
प्रतियाँ	:	1000
संस्करण	:	पंचम, वर्ष-2017
प्रकाशक	:	श्री धर्मतीर्थ प्रकाशन, औरंगाबाद (महाराष्ट्र) Email : dharamrajshree@gmail.com
प्राप्ति स्थान		1. प्रज्ञायोगी दिगम्बर जैनाचार्य श्री गुप्तिनंदीजी गुरुदेव ससंघ 2. श्री धर्मतीर्थ, औरंगाबाद (महाराष्ट्र) 9421503332 3. श्री रमणलाल साहू जी, औरंगाबाद मो. 9823182922 4. श्री सुबोध जैन, राधेपुरी, दिल्ली 9910582687 5. श्री पंकज जैन, कैलाश नगर, दिल्ली 9873378636 6. श्री राजेश जैन (कैबल वाले), नागपुर 9422816770 7. श्री पवन पहाड़िया, इन्दौर 8982511540
मुद्रक	:	राजू ग्राफिक आर्ट, जयपुर फोन : 0141-2313339, मो.नं. : 9829050791 Email : rajugraphicart@gmail.com

अनुक्रमणिका

क्र.	विषय	लेखक	पृ.नं.
1.	आशीर्वाद	ग.ग. कुंथुसागरजी गुरुदेव	4
2.	सम्पादकीय एवं आशीर्वाद	आचार्य गुप्तिनंदीजी गुरुदेव	5
3.	परम शांति का सूत्र है ''श्री शांतिनाथ विधान''	मुनि सुयशगुप्तजी	7
4.	सबके नाथ शांतिनाथ	मुनि चन्द्रगुप्त	8
5.	मेरी विनयांजलि	ब्र. संध्या जैन	12
6.	विनय पाठ		13
7.	पूजा आरंभ (हिन्दी)		14
8.	श्री नित्यमह पूजा	ग. आ. राजश्री माताजी	18
9.	श्री कल्पतरु शांतिनाथ पूजन	ग. आ. राजश्री माताजी	22
10.	अथ शांतिनाथ विधान का कथामुख (पीठिका)		27
11.	मंत्रोद्धार, झल्लरी यंत्रोद्धार		28
12.	झल्लरी यंत्र		31
13.	श्री शांतिनाथ विधान मंडल		32
14.	अथ शांतिनाथ विधान पूजा प्रारम्भ		33
15.	विधान प्रशस्ति		72
16.	प्रज्ञायोगी आचार्य श्री गुप्तिनंदी गुरुदेव की पूजन	मुनि चन्द्रगुप्त	74
17.	अर्घावली		77
18	समुच्चय अर्घ		79
19.	शांतिपाठ (हिन्दी) एवं विसर्जन पाठ		81
20.	श्री शान्तिनाथ भगवान की आरतियाँ		82
21.	श्री शांतिनाथ स्तोत्र	मुनि चन्द्रगुप्त	85
22.	श्री शांत्यष्टक स्तोत्र	ग. आ. राजश्री माताजी	87
23.	श्री शांतिनाथ चालीसा	ग. आ. राजश्री माताजी	88
24.	शांतिनाथ व्रत (शांति भक्ति व्रत)		90
25.	प्रज्ञायोगी आचार्य श्री गुप्तिनन्दीजी गुरुदेव का परिचय		93
26.	चारित्र चंद्रिका, वात्सल्यमूर्ति गणिनी आर्यिका राजश्री माताजी का परिचय		94
27.	साहित्य सूची		95

आशीर्वाद

बड़े हर्ष की बात है कि हमारे विद्वान एवं प्रभावक शिष्य **आचार्य श्री गुप्तिनंदीजी** के शिष्य **मुनि चंद्रगुप्तजी** द्वारा लिखित पुस्तक **'श्री शांतिनाथ विधान'** प्रकाशित हो रही है। शांतिविधान शांतिनाथ भगवान की एक भक्ति का पुण्यबंध का कारण है। जो कोई भी दीन–दरिद्री–दुःखी इस शांतिनाथ विधान को करेगा उसकी सब मनोकामना पूर्ण होगी, सर्व दुःखों का नाश होगा, सर्वकार्य की सिद्धी होगी। इस शांतिविधान के मंत्र का जो कोई भी विधिपूर्वक सवा लाख जाप करेगा वो कोई भी दुःखी नहीं रहेगा, उसके सांसारिक कार्य की सिद्धी होकर आत्मशुद्धी होगी। इसलिए मेरा कहना है कि सभी लोग मुनि श्री चन्द्रगुप्तजी एवं ग.आ. राजश्री माताजी द्वारा रचित इस शांति विधान की पूजा–अर्चना भक्ति एवं मंत्र–आराधना विधिपूर्वक करें, ऐसा मेरा आशीर्वाद है। मुनि श्री चंद्रगुप्त महाराज को भी मेरा आशीर्वाद है।

–ग.गणधराचार्य कुंथुसागर

24 मई, 2013 (कुंथुगिरी)

4

सम्पादकीय एवं आशीर्वाद

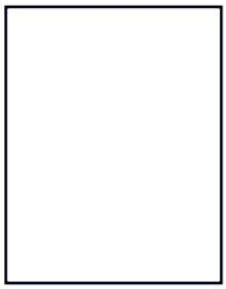

स्वदोष शान्त्या विहितात्मशांतिः
शान्तेर्विधाता शरणं गतानाम्।
भूयाद् भवक्लेश भयोपशान्त्यै,
शान्तिर्जिनो में भगवान् शरण्यः॥

संसार के समस्त प्राणी स्वभाव से शांति चाहते हैं। शांत जीव तो शांति चाहता ही है अपितु अशांत जीव भी शांति चाहता है। सभी अपने पापों की, दुःखों की, संकट की, कर्मों की शांति चाहते हैं। जीवन की सभी समस्याओं का एक ही समाधान है **'श्री शांतिनाथ विधान'**। जैनागम में शांति विधान की बड़ी महिमा गायी गयी है। श्री पूज्यपाद आचार्य (मूलनाम आचार्य देवनंदी) की नेत्र–ज्योति चले जाने पर उन्होंने गुरु आज्ञा से शांति भक्ति की रचना करते हुए भगवान श्री शान्तिनाथ का ध्यान लगाया। ध्यान लगाते ही उनकी नेत्र–ज्योति लौट आयी। शान्ति भक्ति के अतिशय को जानकर ब्रह्म शांतिदास ने संस्कृत में 'श्री शांतिनाथ मंडल विधान' की रचना की। इसी संस्कृत में शांति विधान को आधार बनाकर समय–समय पर अनेक कवियों ने, पंडितों ने व आर्यिका माताओं ने अपनी–अपनी भाषा में शांति विधान का अनुवाद किया। वर्तमान में गणिनी आर्यिका ज्ञानमति माताजी का शांति विधान अधिक प्रचलित है।

हमारी संघस्था **गणिनी आर्यिका राजश्री माताजी** ने भी संघ के मूलनायक श्री शांतिनाथ भगवान के अतिशय को देखकर 'श्री शांतिनाथ विधान' की रचना के भाव बनाये थे। उन्होंने विधान का लेखन कार्य प्रारम्भ भी कर दिया था; परन्तु उनकी समाधि हो जाने से यह कार्य अधूरा रह गया। उनके इस अधूरे कार्य को पूरा करने का पुनीत संकल्प हमारे शिष्य **'मुनि श्री चन्द्रगुप्तजी'** ने लिया और अल्प समयावधि में उसे पूरा भी कर दिया। सृजन शिल्पी युवामुनि श्री चन्द्रगुप्तजी में काव्य–सृजन, लेखन व गायन के गुण बचपन से ही हैं। वे बचपन से ही सृजन धर्म में संलग्न हैं। छोटी–छोटी कविता, पूजन व भजनों की रचना करते–करते आपने 'श्री चन्द्रप्रभु

आराधना', श्री छियानवे क्षेत्रपाल विधान' व 'श्री भक्तामर विधान' की रचना की। अब आपके समक्ष प्रस्तुत है 'श्री शांतिनाथ विधान'। अनेक सरल गेय छन्दों में विभिन्न रस, छंद, अलंकारों का प्रयोग करते हुए आपने सुन्दर भक्ति काव्य की रचना की है।

इस विधान का प्रत्येक छन्द अपने आप में मनोहर हैं। फिर इसके कुछ उदाहरण यहाँ प्रस्तुत हैं :-

नैवेद्य के अर्घ में मनभावन रूप का अनुप्रास अलंकार में आपने सुन्दर वर्णन किया है यथा-

चारू चकोर जिनेश्वर को हम चारू चरू पकवान चढ़ावें।
रंग भरे रसदार बड़े शुभ नेवज से भज पाप नशावें॥5॥

निम्न पंक्तियों में कवि का अपने आराध्य पर दृढ़ विश्वास झलकता है यथा-

माँग किये बिन ही जिनसे हर इच्छित वस्तु हमें मिलती है।
श्रेष्ठ हरे फल से उनको भज कर्मन् की प्रकृति हिलती है॥8॥

निम्न पंक्तियों में भक्त के उत्साह व समर्पण को दर्शाया है यथा-

शुक्र शक्र स्वर्ग के विशेष द्रव्य ला रहे।
मेरू के समान ढेर-ढेर वे चढ़ा रहे॥

इस प्रकार सम्पूर्ण विधान सुरुचिपूर्ण पठनीय है।

मुनिराज की यह भक्ति रचना उनकी मुक्ति रचना में कारण बने यही उनके लिए शुभाशीर्वाद, शुभकामना है।

ग्रन्थ के पाठक, सहयोगी, द्रव्यदाता, मुद्रक सभी को हमारा शुभाशीर्वाद।

29 मई, 2013 **-आचार्य गुप्तिनंदी**
यमुना विहार, दिल्ली

परम शांति का सूत्र है ''श्री शांतिनाथ विधान''

वर्तमान में इस भरतक्षेत्र में दुःखमा काल प्रवर्तमान है जो कि नाम से ही दुःखों की ओर इंगित कर रहा है। आज प्रायः सभी प्राणी शारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिक दुःखों से परेशान हैं और इन सब दुःखों की शांति चाहता है। अच्छा रुपया–पैसा हो, भौतिक संसाधन आदि सभी पास हो, परन्तु आत्मिक शांति के बिना सब व्यर्थ है। पंचमकाल में दुःख से सुख की ओर जाने का अशांति से शांति की ओर बढ़ने का एक ही मार्ग है जिनभक्ति।

शांति की खोज में भटकते मानव के लिये परम शांति का सूत्र है **'श्री शांतिनाथ विधान'**। सोलहवें तीर्थंकर श्री शांतिनाथ हैं जिनका नाम स्मरण ही शांति को प्रदान करने वाला है। ऐसे तीन पदों के धारी श्री शांतिनाथ जिनेन्द्र की आराधना हमें निश्चित ही संसार से उठाकर उत्तम सुख स्थान में विराजमान करने वाली है। श्री शांतिनाथ जिनके परम आराध्य हैं ऐसे **पूज्य आचार्य श्री गुप्तिनंदीजी गुरुदेव** एवं श्री शांतिनाथ प्रभु की परम आराधिका समाधिस्थ **गणिनी आर्यिका राजश्री माताजी** की भावना को पूर्ण करते हुए हमारे साधर्मी **मुनि श्री चन्द्रगुप्तजी** ने अपनी कवित्व शक्ति का उपयोग करते हुए इस विधान की रचना की है। इस विधान की रचना का प्रारम्भ गणिनी आर्यिका राजश्री माताजी ने किया था जिसे बाद में आपने पूर्ण किया। लगभग एक माह की अल्प अवधि में विधान रचना पूर्ण हो जाना यह भी कल्पतरु श्री शांतिनाथ भगवान का अतिशय ही है।

मुनिश्री ने सुन्दर–सुन्दर शब्दों को विभिन्न वार्णिक व मात्रिक छन्दों में बद्ध करते हुए इस विधान को आकर्षक, मनरंजक और पापभंजक बनाया है। इसके पूर्व भी आप श्री भक्तामर विधान, श्री छियानवे क्षेत्रपाल विधान की रचना कर चुके हैं।

यह अतिशयकारी विधान भक्तों के रोग–उपद्रव–पीड़ा को दूर कर निश्चित रूप से आत्मशांति में कारण बनेगा। मुनि श्री चंद्रगुप्तजी भी इस विधान के सातिशय पुण्य से परम शांति (सिद्धपद) को शीघ्र प्राप्त करें, यही हमारी शुभकामना।

पुस्तक के द्रव्यदाता, प्रकाशक, मुद्रक सभी को शुभाशीर्वाद।

24 मई, 2013 **–मुनि सुयशगुप्त**

विवेक विहार, दिल्ली (संघस्थ आचार्य श्री गुप्तिनंदीजी गुरुदेव)

सबके नाथ शांतिनाथ

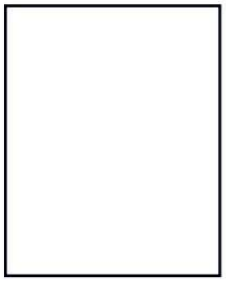

नमस्ते शांतिनाथाय सर्व शांतिप्रदायिने।
पापशांतिंप्रशांतिं च आत्म शांती करोतु माम्॥

जो सर्व शांति देने वाले हैं, उन शांतिनाथ भगवान को मेरा नमस्कार हो वे शांति प्रभु पाप से शांति देवें। मुझे प्रशांत करें तथा मेरी आत्मा में शांति करें।

संसार में प्रत्येक प्राणी चाहता है शांति।
साधक चाहता है आत्मा की शांति।
योगी चाहता है कर्मों की शांति।
रोगी चाहता है रोगों की शांति।
गरीब चाहता हैं गरीबी की शांति।
दुःखी चाहता है दुःखों की शांति।
अज्ञानी चाहता है अज्ञान की शांति।
गृहस्थी चाहता है गृहस्थ जीवन में शांति।
चाहे देवता हो, चाहे मनुष्य हो, चाहे पशु हो,
यहाँ तक की नरक का नारकी भी चाहता है शांति।

संसार में प्रत्येक संसारी प्राणी की आत्मा से मात्र एक ही पुकार निकलती हैं–

शांति.. शांति... शांति... और इन सभी अशांतियों का है एक अनुपम निदान ''श्री शांतिनाथ विधान'', क्योंकि सबके नाथ शांतिनाथ।

मन में एक प्रश्न उठता है कि शांति देने के लिए तो चौबीसों तीर्थंकर की अर्चना सक्षम हैं तो फिर शांतिनाथ विधान एवं भगवान श्री शांतिनाथजी का नाम ही शांति की अपेक्षा क्यूं अतिप्रचलित है।

इसके अनेक अकाट्य कारण है :–

1. ''उत्तरपुराण में भी गुणभद्र स्वामी कहते हैं कि इस संसार में अन्य लोगों की बात जाने दीजिए, श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्र को छोड़कर भगवान तीर्थंकरों में ऐसा कौन है जिसने पूर्व के बारह भवों में से प्रत्येक भव में बहुत भारी वृद्धि प्राप्त की हो।

इसलिये हे विद्वान् लोगों ! यदि तुम शान्ति चाहते हो तो सबसे उत्तम और सबका भला करने वाले श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्र का निरन्तर ध्यान करते रहो। यही कारण है कि आज भी भव्य जीव शांति प्राप्ति के लिए श्री शान्तिनाथ की आराधना करते हैं।''

2. पुष्पदन्त तीर्थंकर से लेकर सात तीर्थंकरों तक उनके तीर्थकाल में धर्म की व्युच्छित्ति हुई अतः धर्मनाथ तीर्थंकर के बाद पौनपल्य अन्तर पावपल्य काल तक इस भरतक्षेत्र के आर्यखण्ड में धर्म का विच्छेद हो गया अर्थात् हुण्डावसर्पिणी के दोष से उस पावपल्यप्रमाण काल तक दीक्षा लेने वालों का अभाव हो जाने से धर्मरूपी सूर्य अस्त हो गया था, उस समय शान्तिनाथ भगवान ने जन्म लिया था। तब से आज तक धर्मपरम्परा अविछिन्नरूप से चली आ रही है इसलिए उत्तरपुराण में भी गुणभद्र स्वामी कहते हैं कि–

''भोगभूमि आदि कारणों से नष्ट हुआ मोक्षमार्ग यद्यपि ऋषभदेव आदि तीर्थंकरों के द्वारा पुनः–पुनः दिखलाया गया था तो भी उसे प्रसिद्ध अवधि के अन्त तक ले जाने में कोई भी समर्थ नहीं हो सका, तदनन्तर जो शांतिनाथ भगवान ने मोक्षमार्ग प्रकट किया, वही आज तक अखण्डरूप से बाधारहित चला आ रहा है इसलिए इस युग के आद्यगुरु श्री शांतिनाथ भगवान ही हैं क्योंकि उनके पहले जो 15 तीर्थंकरों ने मोक्षमार्ग चलाया था, वह बीच–बीच में विनष्ट होता जाता था।''

(3) संसारी छद्मस्थ प्राणियों का चंचल मन नाम के पीछे ज्यादा भागता है अतः तीर्थंकर चक्रवर्ती एवं कामदेव इन तीनों पद के धारी भगवान शांतिनाथ जिनके नाम की ऊर्जा से प्रत्येक श्रद्धालु आत्मा के तार आकर्षित हो जाते हैं तथा सभी भक्त भगवान शांतिनाथ का विधान करके अपने रोग, संकट, दरिद्रता आदि विघ्न की शांति के साथ परम आत्म शांति की कामना करते हैं।

चाहे घर–परिवार में जन्म हो या मरण हो, आगामी संकट का आभास हो, बुरे स्वप्न आये हो अथवा सम्पूर्ण रोग, कष्ट अथवा ऊपरी बाधा आदि समस्त आपदाओं के होने पर दिगम्बर जैनाचार्यों ने उसके निदान हेतु अथवा परिहार हेतु शांति कर्म करना बताया है एवं उसी शांति कर्म का एक प्रतिरूप है **'श्री शांतिनाथ विधान (शांति विधान)।** इस अनुष्ठान में शांति मंत्र, शांतिधारा एवं शांतियज्ञ से

विधिपूर्वक आराधना करने से सम्पूर्ण आपदायें शांत होती हैं। उसमें भी 16 दिन के पखवाड़े में (शुक्ल पक्ष) शांति विधान करने का फल तो विशेष ही बताया है।

हमारे परम गुरुदेव प्रज्ञायोगी दिगम्बर जैनाचार्य श्री गुप्तिनंदीजी गुरुदेव के संघस्थ चैत्यालय में विराजमान, संघ एवं संघ से जुड़े भक्त तथा अन्य श्रद्धालुओं के श्रद्धा के केन्द्र बिन्दु **कल्पतरु श्री शांतिनाथ भगवान जी** जिनके ऊपर प्रतिदिन पंचामृत अभिषेक, महाशांतिधारा होने से तथा अतिशयों से सबके कष्ट नष्ट होकर सर्वकार्य में सिद्धी प्राप्त होती है।

ऐसे प्रभु पर श्री शांतिनाथ विधान की एक नवीन रचना हो, ऐसी भावना आचार्यश्री के मन में सदैव होती थी। अन्य ग्रंथों में लेखन रूप कार्य में व्यस्तता होने से गुरुदेव की इस भावना को साकार रूप देने का अभियान हाथ में लिया **गणिनी आर्यिका राजश्री माताजी** ने। माताजी ने विधान हेतु आचार्य श्री पूज्यपाद स्वामी द्वारा रचित श्री संस्कृत शांत्यष्टक का हिन्दी अनुवाद किया तथा अष्ट द्रव्य से अर्चना रूप आठ छंदों की रचना भी रस, अलंकार एवं काव्य शैली की सुन्दर तारतम्यता से शुरू ही की थी कि उनके आयुकर्म की स्थिति पूर्णता को प्राप्त हो गई। माताजी ने आर्यिका व्रतपूर्वक 4 दिन की कठोर यम सल्लेखना पूर्वक आचार्यश्री के निर्यापकत्त्व में उत्तम समाधिपूर्वक मरण किया। अब माताजी की वो रचना अधूरी रह रही थी।

परन्तु मुझे माताजी के प्रति बचपन से ही लगन एवं श्रद्धा थी तथा अपने संघाधिनायक कल्पतरु श्री शांतिनाथ भगवान से भी अगाढ़ श्रद्धा है। अतः गुरुदेव की आज्ञा से माताजी द्वारा प्रारम्भ किये हुए इस शांतिनाथ विधान की रचना पूर्ण करने का प्रयास मैंने किया तथा भगवान शांतिनाथजी एवं गुरुदेव की कृपादृष्टि से यह लेखन कार्य अतिशीघ्र ही पूर्ण भी हो गया।

जब ये लेखन कार्य मैंने प्रारम्भ किया था तब ग.ग. श्री कुंथुसागरजी गुरुदेव का वरदहस्त भी अपने मस्तक पर मुझे परोक्ष रूप में मिला था एवं आचार्य श्री गुप्तिनंदीजी गुरुदेव ने मुझे इस विधान की रचना करने की जो मेरी मनोभावना थी उसके लिए स्वीकृति एवं आशीर्वाद प्रदान किया, ये मेरे लिए उनका परम उपकार एवं मेरा सौभाग्य ही हैं।

गुरुदेव के प्रोत्साहन ने ही मुझे हर क्षेत्र में बढ़ना सिखाया है तथा सदा ही मेरी सोई हुई चेतना को जागृत किया है। यही उपकार मुझ पर मेरे मुक्ति पथ की प्रदर्शिका गणिनी आर्यिका राजश्री माताजी तथा साथ में आर्यिका क्षमाश्री माताजी का है जिन्होंने अपने ज्ञान एवं अनुभव से जीवन पथ पर मेरे बढ़े प्रत्येक कदमों के नीचे रहने वाले काँटों से मेरी सुरक्षा की है तथा गुरु भ्राता मुनि श्री सुयशगुप्तजी का अपार स्नेह एवं प्रोत्साहन भी मेरी कलम में हमेशा स्याही का काम करता है।

मुनि श्री महिमासागरजी, आर्यिका आस्थाश्री माताजी तथा क्षुल्लिका धन्यश्री माताजी का भी इस कृति के लिए सराहनीय सहयोग मुझे मिला।

आचार्य श्री गुप्तिनंदीजी गुरुदेव से संपादित इस विधान की रचना का श्री गणेश मैंने अशोक नगर, दिल्ली में गुड़ी पाड़वा (चैत्र सुदी प्रतिपदा) 11 अप्रैल 2013 के दिन किया था तथा प्रभु एवं गुरुजनों की असीम अनुकंपा से मात्र सवा महीने में ही यह रचना सूर्य नगर दिल्ली में पूर्ण हो गई तथा भगवान शांतिनाथजी के जन्म–तप एवं निर्वाण महोत्सव पर 7 जून, 2013 को प्रथम बार दिल्ली में ही इस शांति विधान का आयोजन भी हुआ।

इस विधान के सृजन हेतु श्री शांतिदास वर्णीकृत संस्कृत शांति विधान तथा गणिनी प्रमुख श्री ज्ञानमति माताजी कृत श्री शांति विधान का आधार लिया गया है।

इस शांति विधान के रचनाकार वास्तव में तो गणिनी आर्यिका राजश्री माताजी ही हैं, जिन्होंने इसे लिखने का श्री गणेश किया था।

इस विधान के लेखन स्वरूप गणिनी आर्यिका राजश्री माताजी को तथा मुझे मुक्ति स्वरूप परम शांति की प्राप्ति हो एवं विधान करने वाले समस्त श्रद्धालुओं का भी उभयलोक शांतिमय हो। इस विधान से जुड़ी समस्त भव्यात्माएँ अचिंन्त्य अक्षय शांति की प्राप्ति करें।

24 मई, 2013 **–मुनि चन्द्रगुप्त**

विवेक विहार, दिल्ली (संघस्थ शिष्य : आचार्य श्री गुप्तिनंदीजी गुरुदेव)

मेरी विनयांजलि

इस पञ्चम काल में समस्त जीव शारीरिक एवं मानसिक पीड़ाओं से त्रस्त हैं और सुख एवं शान्ति चाहते हैं; परन्तु यह शान्ति भौतिक वस्तुओं से नहीं मिलती बल्कि भगवान के चरणों में और भगवान की भक्ति करने से निर्मल शान्ति प्राप्त होती है। अतः इस काल में **''भक्ति ही मोक्ष का सर्वोत्कृष्ट मार्ग है।''**

संसाररूपी वन में कर्मरूपी अग्नि से दग्ध हुए प्राणी धर्मरूपी निर्मल वर्षा के जल से अपने आत्मोद्यान को सिंचित करें। इसी लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए **आचार्य श्री गुप्तिनन्दीजी गुरुदेव** के शिष्य **मुनि श्री चन्द्रगुप्तजी** तथा **गणिनी आर्यिका राजश्री माताजी** ने **'शान्तिनाथ विधान'** की रचना की है जिसे उन्होंने सुन्दर काव्यों एवं छन्दों में संजोया है। जो हम सभी भक्तों के लिए सुखकारी एवं पुण्य प्रदान करने वाला होगा।

मुनिश्री ने इसके पूर्व भी आचार्यश्री के मार्गदर्शन में कई भजन, कविताओं और विधानों की रचना की है। मुनिश्री बाल्यकाल से ही भजन, कविताएँ एवं आरतियाँ लिखते रहे हैं। मुनिश्री का हृदय भक्ति से ओतप्रोत है अतः वह जो भी रचना करते हैं वह पूर्ण मन एवं हृदय से करते हैं।

इस विधान को मुनिश्री ने स्व–पर कल्याण की भावना से लिखा है।

मुनिश्री अपनी आत्मसाधना करते हुए परम पद को प्राप्त करें इन्हीं शुभकामनाओं के साथ समस्त आचार्य संघ को कोटिशः वन्दन।

–ब्र. संध्या जैन
चितरी (राज.)

12

विनय पाठ

(दोहा)

कर्मजाल में हूँ फँसा पाया है बहु त्रास।
जग स्वारथ से है भरा किस पर हो विश्वास॥1॥

भक्ति-श्रद्धा-विनय सहित आया जिनवर पास।
धन्य हुआ है भाग्य मम मिट गई मन की प्यास॥2॥

प्रभुवर ने तो कर दिए कर्म ये आठों नाश।
केवलज्ञान उदित हुआ जग को दिया प्रकाश॥3॥

नमन करूँ जिनदेव को करके निर्मल भाव।
खेवटिया जिन नाथ मम पार लगा दो नाव॥4॥

भव्यजनों को तारते भवसागर से आप।
शरण आपकी पा प्रभु नश जाते सब पाप॥5॥

गुण अनंत हैं आपके कर न सकें विस्तार।
अजर-अमर जिननाथ तुम हो त्रिभुवन आधार॥6॥

अरिहंत-सिद्धाचार्य का ले मंगल शुभ नाम।
उपाध्याय साधू-चरण सफल करें सब काम॥7॥

जिनवाणी माता मुझे देना सम्यक् ज्ञान।
कृपा करो जिस पर वही बन जाता भगवान्॥8॥

***

13

पूजा आरंभ (हिन्दी)

पूजन की थाली में निम्नलिखित श्लोक बोलते हुए स्वस्तिक बनायें व अंक लिखें–

श्लोक– **रयणत्तयं च वंदे चउवीस जिणे च सव्वदा वंदे।**
पञ्च गुरुणां वंदे चारण–चरणं च सव्वदा वंदे॥

3

2 24

5

ॐ जय–जय–जय – नमोस्तु–नमोस्तु–नमोस्तु।
णमो अरिहन्ताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्व साहूणं॥

(ॐ ह्रीं अनादिमूलमंत्रेभ्यो नमः परिपुष्पाञ्जलि क्षिपामि)

चत्तारि मंगलं, अरिहन्ता मंगलं, सिद्धा मंगलं, साहू मंगलं, केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलं। चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो। चत्तारि सरणं पव्वज्जामि, अरिहंते सरणं पव्वज्जामि, सिद्धे सरणं पव्वज्जामि, साहू सरणं पव्वज्जामि, केवलिपण्णत्तं धम्मं सरणं पव्वज्जामि।

ॐ नमोऽर्हते स्वाहा, पुरिपुष्पाञ्जलि क्षिपामि।

णमोकार मंत्र माहात्म्य

(नरेन्द्र छन्द)

पवित्र हो या अपवित्र, प्राणी चाहे भी हो कैसा।
बुरी अवस्था हो या अच्छी, या ना हो उसपे पैसा॥
णमोकार का ध्यान करे जो, वह पावन बन जाता है।
परमातम का सुमरण ही, जीवन को शुद्ध बनाता है॥

महाभयानक विघ्नों से, यह महामंत्र छुड़वाता है।
जग जीवों को शांतिकारक, मुक्ति जो दिलवाता है॥1॥
सब पापों का क्षयकारक जो, सबमें पहला मंगल है।
विश्वशांति का महाविधायक, हरे अनिष्ट अमंगल है॥
अर्हं का उच्चारण करके, परम ब्रह्म को नमता हूँ।
सिद्धचक्र के बीजाक्षर को, नमस्कार नित करता हूँ॥2॥
कर्म अष्ट से मुक्त हुए जो, मुक्ति निकेतन के वासी।
सम्यक्त्वादि गुणों से भूषित, नमस्कार हो अविनाशी॥
जिनवर की पूजन करने से, प्रलय-विघ्न नश जाते हैं।
भूत शाकिनी सर्प शांत हो, विष-निर्विष हो जाते हैं॥3॥

(पुष्पाञ्जलि क्षिपामि)

उदकचंदनतंदुलपुष्पकैश्चरूसुदीपसुधूपफलार्घकैः।
धवलमंगलगानरवाकुले जिनगृहे कल्याणमहंयजे॥1॥

ॐ ह्रीं श्री भगवतो गर्भजन्मतपज्ञाननिर्वाण पंचकल्याणकेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उदकचंदनतंदुलपुष्पकैश्चरूसुदीपसुधूपफलार्घकैः।
धवलमंगलगानरवाकुले जिनगृहे जिनइष्टमहंयजे॥2॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हंत्सिद्ध आचार्य उपाध्याय सर्वसाधुभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उदकचंदनतंदुलपुष्पकैश्चरूसुदीपसुधूपफलार्घकैः।
धवलमंगलगानरवाकुले जिनगृहे जिननाममहंयजे॥3॥

ॐ ह्रीं श्री भगवज्जिनसहस्रनामेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वस्ति वाचन

(नरेन्द्र छन्द)

अनंत चतुष्टय के तुम धारक, स्याद्वाद के हो दायक।
अंतर भौतिक लक्ष्मी शोभित, वंदनीय त्रिभुवन नायक॥
मूलसंघ के भव्य प्रवर को, पुण्य दिलाते हो बिन हेत।
करें जिनेश्वर की विधि पूजा, धन्य भाग्य मम भक्ति समेत॥1॥

तीन लोक में श्रेष्ठ व सुंदर, प्रभु की महिमा उदित हुई।
स्वतः प्रकाशमयी दृग्ज्योति, भव्यों के हित मुदित हुई॥
निर्मल ज्ञानामृत है प्रगटा, मंगल स्व-पर प्रकाशक हार।
तीन लोक में फैल गया वह, त्रिजग वस्तु का जाननहार॥2॥

द्रव्यशुद्धि औ भावशुद्धि, दोनों विधि का आलम्बन ले।
करूँ यथार्थ पुरुष की पूजा, भाव सहित मैं द्रव्य लिए॥
सर्व वस्तु का ज्ञान कराते, अर्हत पुरुषोत्तम पावन।
उनकी केवलज्ञान अग्नि में, करें विसर्जित पुण्यार्जन॥3॥

(ॐ ह्रीं विधियज्ञप्रतिज्ञानाय जिनप्रतिमोपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

चौबीस तीर्थंकर स्तुति

(यहाँ प्रत्येक भगवान के नाम के साथ पुष्पाञ्जलि क्षेपण करें।)

(नरेन्द्र छन्द)

मंगल वृषभदेव जिनवर हैं, अजितदेव भी हैं मंगल।
मंगल संभव श्री जिनस्वामी, अभिनंदन करते मंगल॥
मंगल कर्ता सुमतिप्रभु हैं, पद्मप्रभु मंगलदायक।
श्री सुपार्श्व करते हैं मंगल, चंद्रप्रभु हैं सुखकारक॥1॥

पुष्पदंत अमंगल हर्ता, शीतल शीतलता दाता।
श्री श्रेयांस सुमंगल भूषण, वासुपूज्य सब सुख दाता॥
विमल कष्ट हर मंगल करते, अनंतजिन सब सुख कर्ता।
धर्मप्रभु मंगल स्वरूप बन, शांतिप्रभु शांति कर्ता॥2॥

कुंथुनाथ मंगलधर स्वामी, अरहनाथ अरि के हर्ता।
श्री मल्लि मंगल जिन स्वामी, मुनिसुव्रत मुनि के भर्ता॥
नमिजिनेश मंगल की मूरत, नेमिनाथ प्रभु हितकारी।
पार्श्वप्रभो उपसर्ग विजेता, वर्द्धमान मंगलकारी॥3॥

(पुष्पाञ्जलि क्षिपामि)

16

स्वस्ति मंगल विधान

(यहाँ प्रत्येक श्लोक के अंत में पुष्पाञ्जलि क्षेपण करना चाहिए।)

नित्य अचल क्षायिक ज्ञानधारी, विशुद्ध मनःपर्यय ज्ञानधारी।
देशावधि आदि युत ऋषि मुनिगण, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में॥1॥

महाकोष्ठ बीजबुद्धि पदानुसारि, संभिन्न संश्रोतृ स्वयं बुद्धिधारी।
प्रत्येकबुद्ध-बोधिबुद्ध ऋषिवर, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में॥2॥

अभिन्नदशपूर्व-चतुर्दश पूर्वी, दिव्य मतिज्ञान महाबलधारी।
अष्टांगनिमित्त ज्ञाता ऋषिगण, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में॥3॥

स्पर्श-चक्षु-कर्ण-घ्राण-रसना, आदि प्रबल इन्द्रिय के धारी।
महाशक्तिवन्त जिनमुनि-यति-ऋषिगण, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में॥4॥

फल-तन्तु-नीर-जंघा-श्रेणी, पुष्प-बीज-अंकुर-रवि-अग्नि-गामी।
नभ-जल-वायुचारण ऋषिगण, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में॥5॥

अणु-महालघु-गुरुऋद्धिधारी, सकामरूपित्व-वशित्वधारी।
वर्द्धमान बल के धारी गुरुवर, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में॥6॥

मन औ वचनबल-कायबल ऋद्धि, प्राकाम्य-अप्रतिघात गुणधारी।
विक्रिया-क्रियाऋद्धि धारी गुरुवर, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में॥7॥

उग्रोग्रतप-दीप्त-तप-तप्ततपसी, अवस्थित-उग्रतप-महातपऋद्धि।
तपो-लब्धि आदि से युक्त ऋषिगण, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में॥8॥

आमर्ष-सर्वौषध ऋद्धिधारी, आषीर्विष-दृष्टिविष बल धारी।
सखिल्ल-विडजल्ल-मल्लौषधियुक्त, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में॥9॥

क्षीरास्रवी-घृतस्रावी मुनीश्वर, अमृत-मधु-महारस के धारी।
अक्षीणआलय-महानस आदि, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में॥10॥

इति परमर्षि स्वस्ति मंगल विधानं (9 बार णमोकार मंत्र का जाप करें)

17

श्री नित्यमह पूजा

रचियित्री : ग. आर्यिका राजश्री माताजी

शंभु छन्द *(तर्ज– हे वीर तुम्हारे...)*

अरिहंत, सिद्ध, सूरी, पाठक, साधु और जिनवर चौबीसों।
गणधर जिन पंच बालयतिवर, जिन आगम गुरु प्रभुवर बीसों॥
माँ जिनवाणी, निर्वाणभूमि, रत्नत्रय, दशलक्षण प्यारा।
नंदीश्वर पंचमेरू जिनवर, जिनचैत्य चैत्यालय मनहारा॥
जिनधर्म जिनागम बाहुबली, सोलहकारण पूजन करता।
इनका आह्वानन करके मैं, श्री मोक्ष महल का सुख वरता॥1॥

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्राः ! अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्राः ! अत्र तिष्ठ–तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्राः ! अत्र मम सन्निहितो भव–भव वषट् सन्निधिकरणम्।

नरेन्द्र छन्द *(तर्ज : माइन–माइन...)*

धीर वीर गंभीर प्रभु की अर्चा मैं नित करता हूँ।
निर्मल जल की त्रय धारा दे जन्म–जरा–मृत हरता हूँ॥
देव–शास्त्र–गुरु बीस तीर्थंकर जिनवाणी गणधर पूजा।
त्रय चौबीसी रत्नत्रय नंदीश्वर दशलक्षण पूजा॥
सोलहकारण बाहुबली निर्वाणभूमि वा नवदेवा।
पंच परम परमेष्ठी पद की करते उत्तम सेवा॥1॥

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

शीतल चंदन चरण चढ़ाता शीतलता मुझको देना।
भव का बन्धन हरने वाले भव की ज्वाला हर लेना॥ देव शास्त्र..॥2॥

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

धवल मनोहर अक्षत लाया अक्षयपद पाने हेतू।
अक्षयपद को देने वाली पूजन है सबका सेतू ॥ देव शास्त्र..॥3॥

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

जल भूमिज बहु पुष्प चढ़ाऊँ भक्ति से जिन गुण गाऊँ।
कामबाण को वश में करके मन ही मन मैं हर्षाऊँ ॥
देव-शास्त्र-गुरु बीस तीर्थंकर जिनवाणी गणधर पूजा।
त्रय चौबीसी रत्नत्रय नंदीश्वर दशलक्षण पूजा॥
सोलहकारण बाहुबली निर्वाणभूमि वा नवदेवा।
पंच परम परमेष्ठी पद की करते उत्तम सेवा॥4॥

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

पुआ पकौडी रबड़ी घेवर आदिक व्यंजन मैं लाया।
क्षुधावेदनी के भेदन को प्रभु सन्मुख दौड़ा आया॥ देव शास्त्र..॥5॥

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जगमग दीपों की थाली ले आरती प्रभु की गाऊँगा।
मोहकर्म का नाश मेरा हो सम्यक्भाव बनाऊँगा॥ देव शास्त्र..॥6॥

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप धूपायन में खेकर मैं अष्टकर्म का हनन करूँ।
प्रभु प्रतिमा के दर्शन करके निज स्वभाव का वरण करूँ॥ देव शास्त्र..॥7॥

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

ताजे मीठे फल से अर्चा मनवांछित फल देती है।
प्रभु की अर्चा मेरे जीवन के संकट हर लेती है॥ देव शास्त्र..॥8॥

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो महामोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

नीरादिक आठों द्रव्यों का सुन्दर थाल सजाया है।
पद अनर्घ्य की अभिलाषा से भक्तिभाव जगाया है॥ देव शास्त्र..॥9॥

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा : वीतराग भगवान की, पूजा सब सुख खान।
त्रयधारा जल की करूँ, छोडूँ सब अभिमान॥

शांतये शांतिधारा।

दोहा– काम सृष्टि का नाश हो, पुष्पवृष्टि के साथ।
पुष्पांजलि क्षेपण करूँ, पूर्ण विनय के साथ॥

दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र : ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो नम:। (9, 27 या 108 बार जाप करें)

जयमाला

दोहा : जयमाला की माल से, गूंजे जय–जयकार।
जयमाला हम पढ़ रहे, मिलकर सब नर–नार॥

शंभु छन्द *(तर्ज : ये देश है वीर...)*

श्री वीतराग सर्वज्ञ हितैषी अरिहंतों को नमन करूँ।
श्री सिद्ध सूरी पाठक साधु जिनचैत्य जिनालय नमन करूँ॥
सब द्वीपों के प्रभुवर न्यारे सीमंधर आदिक को ध्याऊँ।
श्री पंचमेरू अरू नंदीश्वर के चैत्यालय के गुण गाऊँ॥1॥

दशलक्षणधर्म हृदय धारूँ सोलहकारण भावन भाऊँ।
रत्नत्रय धारण करने के सम्यक् साधन को अपनाऊँ॥
चौदह सौ बावन गणधर जी सब ऋद्धि–सिद्धि देने वाले।
प्रभु के पाँचों कल्याणक भी सबका संकट हरने वाले॥2॥

जिनवर के सब जन्मस्थल को करता हूँ मैं शत–शत वंदन।
श्रावस्ती कौशाम्बी काशी अयोध्या चंद्रपुरी वंदन॥
काकंदी राजगृही मिथिला चंपापुर कुंडलपुर वंदन।
कम्पिलजी सिंहपुरी भद्रिल हस्तिनापुर आदि वंदन॥3॥

अतिशय औ सिद्धक्षेत्र जी का सुमरण सब पाप तिमिर हरता।
मैं चंपा पावा ऊर्जयंत सम्मेदशिखर वंदन करता॥

20

पावा द्रोणा सोना तुंगी कैलाश चूलगिरी ध्याऊँगा।
रेसंदी मुक्ता उदयरत्न कुंथलगिरी को मैं जाऊँगा॥4॥

विपुलाचल पोदनपुर मथुरा तारंगा गजपंथा वंदन।
श्री सिद्धवरकूट कमलदहजी गुणावा शत्रुंजय वंदन॥
अहिक्षेत्र अणिंदा वृषभदेव जटवाडा पैठण चंवलेश्वर।
कचनेर चाँदखेड़ी पाटन जिन्तूर तिजारा गोमटेश्वर॥5॥

कुन्थुगिरी नवग्रह धर्मतीर्थ मांडल के चन्दा को वंदन।
श्री महावीरजी पदमपुरा आदिक तीर्थों को भी वंदन॥
जय ऊर्ध्व मध्य और अधोलोक के सब चैत्यालय मनहारी।
निर्वाण सिधारे पूज्य पुरुष की पूजा सब संकटहारी॥6॥

श्री राम हनु सुग्रीव नील महानील कुम्भ शम्बु ज्ञानी।
लवमदनांकुश सागर वरदत्त श्री बाहुबली स्वामी ध्यानी।
गौतम जम्बू सुधर्मा श्री त्रय पांडवसुत अनिरूद्ध नमन।
इस ढाईद्वीप से मोक्ष पधारे उन गुरुओं को है वंदन॥7॥

श्री पँचबालयति को ध्यायें नवदेवों की शरणा पायें।
सातिशय पुण्य कमाने को मंगलमय पूजा हम गायें॥
जिनगुण के अनुरागी बनकर संसार भ्रमण का नाश करें।
शिवपुर के राजतिलक हेतु यह 'राज' प्रभुगुण आश करे॥8॥

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा : श्री जिन के आशीष से, प्रगटाऊँ निज ज्ञान।
पूजन-कीर्तन-भजन से 'राज' वरे शिव थान॥

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

21

श्री कल्पतरु शांतिनाथ पूजन

रचियित्री : ग. आर्यिका राजश्री माताजी

स्थापना (शंभु छंद)

श्री शांतिनाथ प्रभु की अर्चा सब विघ्न पाप का नाश करे।
प्रभु शांतिनाथ के कीर्त्तन से हम रोग-शोक-दुःख-त्रास हरें॥
नानाविधि की पुष्पाञ्जलि से आह्वानन करने हम आये।
मन पंकज के सूरज जैसे शांतीश्वर के गुण हम गायें॥

ॐ ह्रीं श्री कल्पतरु शांतिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्री कल्पतरु शांतिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री कल्पतरु शांतिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(नरेन्द्र छन्द)

भवसागर की कर्मलहर ही भव-भव में भटकाती है।
प्रभुवर को जल अर्पण करके भव पीड़ा मिट जाती है॥
त्रय पद धारी शांतिनाथजी त्रय लोकों के स्वामी हो।
शांतिप्रदाता भाग्यविधाता हे प्रभु ! अंतर्यामी हो॥1॥

ॐ ह्रीं श्री कल्पतरु शांतिनाथ जिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु चरणों में वंदन करके चंदन भक्त चढ़ाते हैं।
सुरभित चंदन लेपन करके भवसंताप मिटाते हैं॥ त्रय पद...॥2॥

ॐ ह्रीं श्री कल्पतरु शांतिनाथ जिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

धन्य हमारे भाग्य जगे हैं अक्षत पुंज चढ़ायें हम।
अक्षय पद की अभिलाषा से गीत प्रभु के गायें हम॥ त्रय पद...॥3॥

ॐ ह्रीं श्री कल्पतरु शांतिनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

जल भूमिज षट्ऋतु के सुरभित पुष्प गुच्छ ले आये हम।
कामविजय हित कामदेव श्री शांतिनाथ को ध्यायें हम॥ त्रय पद...॥4॥

ॐ ह्रीं श्री कल्पतरु शांतिनाथ जिनेन्द्राय कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

षट्रस व्यंजन थाल सजाकर झूमें-नाचें-गायें हम।
क्षुधा शत्रु को दूर भगाने शांति शरण अपनायें हम॥
त्रय पद धारी शांतिनाथजी त्रय लोकों के स्वामी हो।
शांतिप्रदाता भाग्यविधाता हे प्रभु ! अंतर्यामी हो॥5॥

ॐ ह्रीं श्री कल्पतरु शांतिनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोहतिमिर की घोर निशा में अंधकार अति छाया है।
मोहमहातम हरने हमने प्रभु को दीप चढ़ाया है॥॥ त्रय पद...॥6॥

ॐ ह्रीं श्री कल्पतरु शांतिनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतिनाथ की छत्रछाँव में कर्म धूप क्या त्रस्त करें।
धूप चढ़ाकर हम सब प्रभु को आठों कर्म विनष्ट करें॥ त्रय पद...॥7॥

ॐ ह्रीं श्री कल्पतरु शांतिनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

रंग-बिरंगे षट्ऋतुओं के सरस मधुर फल हम लाये।
मुक्तिरमा से ब्याह रचाने प्रभु कीर्त्तन मन को भाये॥ त्रय पद...॥8॥

ॐ ह्रीं श्री कल्पतरु शांतिनाथ जिनेन्द्राय महामोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

पृथक्-पृथक् ये अष्ट द्रव्य सब अर्घ थाल में आन मिले।
अर्घ चढ़ा हम शांति प्रभु से सिद्धशिला में जाय मिले॥ त्रय पद...॥9॥

ॐ ह्रीं श्री कल्पतरु शांतिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचकल्याणक *(सखी छंद)*

जिन जननी ऐरा माता प्रभु शांतिनाथ की माता।
प्रभु उनके गर्भ समाये जब भादो सप्तम आये॥1॥

ॐ ह्रीं भाद्रपदकृष्णासप्तम्यां गर्भमंगलमंडिताय श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु शांतिनाथजी जन्में छाई खुशियाँ त्रिभुवन में।
थी जेठ चौदसी काली जन्मोत्सव रूप दीवाली॥2॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णाचतुर्दश्यां जन्ममंगलमंडिताय श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

23

प्रभु ने चक्री पद पाया फिर भी वैराग्य जगाया।
तिथि जेठ चौदसी श्यामा प्रभु श्रमण बने अभिरामा॥3॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णाचतुर्दश्यां तपोमंगलमंडिताय श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रेणी आरोहण करके चउ घाति कर्म क्षय करके।
प्रभु आप्त जिनेन्द्र कहाये जब पौष सुदी दश आये॥4॥

ॐ ह्रीं पौषशुक्लादशम्यां केवलज्ञानमंगलमंडिताय श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जन्में जिस मास तिथि में दीक्षित उस मास तिथि में।
वो जेठ चौदसी प्यारी भवमुक्त हुए त्रिपुरारी॥5॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णाचतुर्दश्यां मोक्षमंगलमंडिताय श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा : **शांतिनाथ पद हम करें शांतिधार सुखदाय।**
पुष्पांजलि कर नाथ पर शांति पुष्प खिल जाय॥

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र : ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथाय जगत्शांतिकराय सर्वोपद्रव शांतिं कुरु-कुरु ह्रीं नमः स्वाहा। (9, 27 या 108 बार जाप करें।)

जयमाला

दोहा : **शांतिनाथ भगवान का नाम सरीखा काम।**
जयमाला गा हम पढ़ें प्रभुवर का जयगान॥

(शेर छंद)

जय शांतिनाथ परम पिता परम शांतिदा।
तीर्थेश चक्रवर्ती कामदेव मुक्तिदा॥
प्रभु शांति कल्पवृक्ष शांति बाँटते सदा।
प्रभु अर्चना से हो समस्त आपदा विदा॥1॥

24

जब हस्तिनागपुर में आपका जनम हुआ।
तब तीन लोक में बड़ा अचिंन्त्य सुख हुआ॥
ऐरा सुमात आपकी त्रिलोक पूज्य हैं।
महाराज विश्वसेन जनक विश्वपूज्य हैं॥2॥

संतप्त स्वर्ण सी महान कांति आपकी।
चालीस धनुष श्रेष्ठ तुंग काय आपकी॥
इक लाख वर्ष की विशेष आयु आपकी।
प्रभु तीन लोक व्याप्त श्रेष्ठ कीर्ति आपकी॥3॥

हुंडावसर्पिणी में आप चक्री पाँचवें।
सुन्दर चरम शरीरी कामदेव बारवें॥
तीर्थेश सोलवें स्वयंभू आप कहाये।
सम्पूर्ण भरतवर्ष के प्रताप कहाये॥4॥

पच्चीससहस[1] वर्ष का कुमारकाल था।
पच्चीससहस वर्ष ही स्वराज्यकाल था॥
फिर जब पचास सहस वर्ष आयु बीतली।
तब चक्ररत्न रूप दिव्य संपदा मिली॥5॥

प्रभु आपकी छियानवें हजार रानियाँ।
फिर भी अति आसक्ति रूप भाव ना किया॥
पद्मादि नौ निधि महाविभूति आपकी।
चौदह सुरत्नरूप दिव्यलक्ष्मी आपकी॥6॥

इक छत्र राज आपने षट्खण्ड पे किया।
जन-जन को पितृतुल्य प्रेम आपने दिया॥
पच्चीस सहस वर्ष दिव्य चक्र चलाया।
सुख भोग में ही पौन लाख वर्ष बिताया॥7॥

1. पच्चीस हजार

25

दर्पण में एक बार युगल बिंब निहारा।
तब राग छोड़के विराग भाव संवारा॥
जाकर के वन में वेष दिगम्बर धरें प्रभो।
त्रैसठ महान् ऋद्धियाँ तभी वरें विभो॥8॥

सोलह बरस कठोर तपस्या करी भली।
कर मोह विजय हो गये सयोग केवली॥
छत्तीस गणधरों से नाथ आप शोभते।
द्वादश गणों को दिव्य देशना से बोधते॥9॥

लगभग पच्चीस सहस वर्ष तक विहार कर।
वृषचक्र[1] चलाया अनेक भव्य तारकर॥
सम्मेदशिखर का महान कूट कुंदप्रभ।
त्रय योग रोधकर वहाँ विराजे शांतिप्रभ॥10॥

उस टोंक पे ही सर्व अष्ट कर्म खिर गये।
श्रीशांतिनाथ सर्वसिद्ध संग मिल गये॥
प्रभु के समय से जिनधरम अबाध चल रहा।
अब तक भी धर्म का बिगुल अटूट बज रहा॥11॥

भगवन हमें भी आप सम सुशांति दिलाओ।
भव विघ्न क्लेश रूप सब अशांति मिटाओ॥
प्रभु शांति में अनंत सौख्य शांति समायें।
प्रभु शांति से अनंत शांति 'राजश्री' पायें॥12॥

ॐ ह्रीं श्री कल्पतरु शांतिनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा : शांतिनाथ भगवन हमें दे दो ये वरदान।
समिति गुप्तिव्रत पाल हम बन जायें भगवान॥

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

1. धर्म चक्र।

26

अथ शांतिनाथ विधान का कथामुख (पीठिका)

इस शांतिनाथ विधान को किसने कब किया ? और इसका क्या फल मिला ? उसको मैं कहता हूँ, सो यह मेरी बाल चेष्टा ही है।

मथुरा प्रांत में सूर्यवंशी राजा हुआ, जिसके अन्यायी होने से प्रजा भी अन्याय करने वाली हो गई।

तब उस ग्राम के रक्षक देव ने रुष्ट होकर दारुण उपसर्ग प्रारम्भ किया, उसने उस समय नाना रोगों से राजा को सम्पूर्ण प्रजा को भी व्याकुल कर दिया।

उस किन्नर ने उस नगर में ऐसा अधिक उपद्रव किया कि वह नगर प्रजाजनों से रहित शून्य जैसा हो गया।

एक समय वर्षाकाल में 'सुमति' नाम का एक व्यापारी आषाढ़ शुक्ला त्रयोदशी को वहाँ की स्थिति को न जानता हुआ अकस्मात् आ गया।

मेघ वर्षा को देखकर वह व्यापारी नगर में प्रवेश करके वहीं एक शून्य मकान में ठहर गया।

वहाँ पर उपद्रव के निमित्त से विकल हो उठा तब उसने राजा के समीप पहुँचकर सारी बातें निवेदित कर दीं।

पुनः चैत्यालय में जाकर आदर सहित अर्हंत की पूजा की और वहाँ पर उसने चारण ऋद्धिधारी दो मुनियों के दर्शन किये।

उन्हें नमस्कार करके सामने बैठकर विनय से पूछता है कि हे प्रभो ! किस उपाय से यह उपद्रव शान्त हो सकता है, सो आप कृपा करके बताइये ?

वैश्य के ऐसे वचन सुनकर बड़े मुनिराज ने कहा कि हे महाभाग ! इस अवसर पर शांतिनाथ का पूजा विधान करना चाहिए।

इससे सारे उपद्रव शांत हो जायेंगे। मुनि की वाणी पर श्रद्धा रखकर

27

वैश्य के साथ राजा एवं प्रजा ने विधिपूर्वक शांति विधान किया। उससे पूरे नगर में अशांति उपद्रव समाप्त हो गये और राजा ने अन्याय छोड़ दिया। प्रजा भी धर्मनीति के अनुसार रहने लगी। अतः ऐसे शांति विधान की महिमा अपरम्पार है।

मंत्रोद्धार

ॐ नमोऽर्हते भगवते श्री शान्तिनाथाय सकलविघ्नहराय ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा (अमुकस्य)[1] सर्वोपद्रवशांतिं लक्ष्मीलाभं च कुरु कुरु नमः स्वाहाः।

यह शांतिविधान का 'मंत्रराज' है, सम्यक् प्रकार एकाग्रचित होकर जपने से जपने वाले को शान्तिदायक और लक्ष्मी प्रदान करने वाला है।

हे भद्र ! अब मैं इस विधान की और मंत्र साधन की विधि कहता हूँ सो सुनो, जिससे कि सभी विघ्न नष्ट हो जावेंगे और सर्व सम्प्रदाएँ प्राप्त होंगी।

जब शुक्ल पक्ष सोलह दिन का हो तब शुक्ला प्रतिपदा से प्रारम्भ कर पूर्णिमा तक यह विधान करें तथा प्रतिदिन उपर्युक्त मंत्र का एक हजार जाप करते हुए विधि पूर्ण करें अर्थात् अन्त में दशांश आहुति रूप हवन विधि करके यह विधान सम्पन्न करे।

पहले यंत्र की पूजा करें, पुनः दीपक और धूप को रखकर उतने ही सुगन्धित पुष्पों से मंत्र का जाप करें।

झल्लरी यंत्रोद्धार

कांसे की दो झल्लरी लाकर उसके पृष्ठ भाग पर यंत्र बनावे। यंत्र बनाने की विधि यह है– पहले आठ दल का एक कमल बनावे, उनके बीच में 'अर्हंत पद' लिखे ऊपर में सिद्धों को, उत्तर की तरफ आचार्यों को, पूर्व की

1. जिसके लिए करना हो उसका नाम लेवे, यदि अपने लिए हो तो 'मम' कहे।

तरफ उपाध्याय को और बाईं तरफ साधु पद को लिखें, इस प्रकार से दिशाओं के दलों को पूर्ण करें। पुनः आग्नेय कोण से प्रारम्भ करके ईशान कोण तक क्रम से 'एसो पंच णमोयारो' इत्यादि के चार पद लिखें–22, 23, 24॥

अनन्तर पूर्वोक्त शान्ति मंत्र से इस यंत्र को चारों तरफ से वेष्टित कर देवें। आचार्य सुवर्ण की शलाका (कलम) से शुद्ध केशर से यह यंत्र बनावे।

पुनः इस यंत्र को ऊँचे स्थान पर स्थापित कर सामने दर्पण रखे कि जिसमें इस यंत्र का प्रतिबिम्ब पड़ता रहे। उस दर्पण में जो यंत्र का प्रतिबिम्ब पड़ रहा है उसका विधिवत् अभिषेक करे।

पूजा विधान के पूर्व और पश्चात् भी जिनालय के ऊपर स्थान में जाकर 'शान्ति भक्ति' का पाठ पढ़ते हुए झल्लरी मुख का ताड़न करना चाहिए अर्थात् इस कांसे की झल्लरी को बजाना चाहिए।

इस झल्लरी की ध्वनि जितने देश तक जितनी दूरी तक पहुँचती हैं उतने स्थान तक विघ्नों का नाश हो जाता है। पुनः जो मंत्र की साधना करते हैं उसके फल का क्या कहना ? अर्थात् विधिवत् मंत्र जपने का फल तो अचिन्त्य है ही इसमें कोई आश्चर्य नहीं है।

इस विधान को कराने वाला पूज्यक पहले दिगम्बर आचार्य मुनि आदि का सान्निध्य एवं आशीर्वाद आदि प्राप्त करें। गृहस्थाचार्य विधि विधान को जानने वाला, जितेन्द्रिय और प्रश्नों को सहन करने वाला हो तथा यजमान–पूजा करने वाला श्रावक श्रद्धावान हो, धीर हो और पूजन करने का उत्सुक हो। वह अपनी धर्मपत्नी सहित अभिषेक और पूजा की सामग्री को अपने हाथ में लेकर ईर्यापथ शुद्धि से मंदिर में जावे।

प्रसन्नचित्त यह श्रावक शुभ दिन में अर्हंतदेव के मंदिर में प्रवेश करके जिनेन्द्रदेव की पूजन विधि सम्पन्न करे, पुनः गृहस्थाचार्य के निकट पहुँच कर उनसे प्रार्थना करे।

हे महापुरुष ! मैं जिनयज्ञ विधान करना चाहता हूँ और आप विधि विधान के जानकार हैं अतः आप मेरे प्रमाण हैं ऐसा मुझे विश्वास है।

29

इतना सुनकर वह आचार्य कहे कि हे भव्य ! आपका यह विचार प्रशंसनीय है जो कि आपने यह जिनयज्ञ विधान करना चाहा है।

तुम्हें इस विधान में ब्रह्मचर्य ग्रहण करना है, एकाशन करना है और कठोर वचनों का त्याग करके कलुषता को छोड़ना है।

सभी प्राणियों में सौहार्द भाव एवं उदारता को धारण करना है, ऐसा कहकर वो आचार्य उस बुद्धिमान के ललाट में तिलक लगावे।

पुनः वह वहाँ से आकर विधानाचार्य के आदेश से मनोहर मंडप का निर्माण कराकर उसमें चौकौन वेदी बनावे। उस पर मंडल को पूरे, उसके चारों तरफ चार प्राकार बनावे। पुनः पहले वलय में आठ कोठे, उसके आगे दूने–सोलह कोठे, पुनः दूने–बत्तीस कोठे, पुनः दूने–चौसठ कोठे बनावे।

जिनेन्द्रदेव की, शास्त्र की और गुरु की भी विधिवत् अर्चा करके पुष्पाञ्जलि क्षेपण करें।

प्रथम ही गुरु की आज्ञा लेकर पूजा प्रारम्भ करे। उसमें पहले सहस्रनाम की पूजा सकलीकरण करे।

पश्चात् हे नृपः ! शांतिनाथ की प्रतिमा की स्थापना के लिए श्री कलिकुण्ड पार्श्वनाथ की पूजा आदि करके मण्डप की शुद्धि करें।

वाद्यों की ध्वनि करते हुए बीच में शांतिनाथ भगवान की मूर्ति को विराजमान करके शान्ति भक्ति का पाठ करके नीर, गन्ध, अक्षत आदि आठ द्रव्यों से पूजा करते हुए विधिवत् शांति मंत्र का जाप करें, अनन्तर पुण्याहवाचन करे।

पूजा विधान के अन्त में वहाँ पर आये हुए मनुष्यों को यथाशक्ति दान देवे, उनका सम्मान आदि करके उन्हें संतुष्ट करे।

(साभार–गणिनी प्रमुख आर्यिका ज्ञानमती माताजी द्वारा लिखित शांतिनाथ विधान से।)

31

32

अथ शांतिनाथ विधान पूजा प्रारम्भ

स्थापना (मत्तगयंद छंद)

(तर्ज : वीर हिमाचल तें निकसि)

हे जगदीश्वर ! चक्रपतीश्वर शांति जिनेश्वर शांति बढ़ाओ।
शांति सुधाकर शांति प्रभाकर हे प्रभु ! सर्व अशांति मिटाओ॥
शांति विधान महान रचावन पावन धन-धन भाग्य हमारो।
श्रेष्ठ सिंहासन सा मन पावन आन यहाँ भगवान पधारो॥

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्र सर्वकर्मबंधनविमुक्त सम्पूर्णोत्तम मंगलप्रद हे पंचम चक्रेश्वर ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननम्।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्र सर्वकर्मबंधनविमुक्त सम्पूर्णोत्तम मंगलप्रद हे द्वादशकामदेवेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्र सर्वकर्मबंधनविमुक्त सम्पूर्णोत्तम मंगलप्रद (शरणभूत) हे षोडशोत्तम तीर्थंकर ! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

शांति भक्ति

मूलकर्त्ता : आचार्य श्री पूज्यपाद स्वामी **पद्यानुवादकर्त्री : ग.आ. राजश्री माताजी**

(शार्दूलविक्रीड़ित छंद)

न स्नेहाच्छरणं प्रयान्ति भगवन् ! पादद्वयं ते प्रजाः।
हेतुस्तत्र विचित्रदुःखनिचयः संसारघोरार्णवः॥
अत्यंतस्फुरदुग्ररश्मिनिकर-व्याकीर्ण-भूमंडलो।
ग्रैश्मः कारयतीन्दुपादसलिल-च्छायानुरागं रविः॥1॥

(नरेन्द्र छंद)

हे प्रभु ! तेरी चरण शरण में भव्य प्रेम से ना आते।
कर्मपुंजयुत भवसमुद्र से घबराकर वे सब आते॥
गर्मी में तपते सूरज की किरणों से हर एक डरे।
इस हित वो छाया जल अथवा चंद्रकिरण से प्रेम करे॥1॥

33

क्रु द्धाशीर्विषदष्टदुर्जयविष-ज्वालावलीविक्र मो ।
विद्याभेषजमन्त्रतोयहवनै-र्याति प्रशांतिं यथा ।।
तद्वत्ते चरणारुणांबुजयुग-स्तोत्रोन्मुखानां नृणाम् ।
विघ्नाः कायविनायकाश्च सहसा शाम्यन्त्यहो ! विस्मयः ॥2॥

अतिक्रोधित हो सर्प डसे तब विद्या औषध मंत्र करे।
मंत्रित जल वा हवन आदि से विष संकट को दूर करे॥
ऐसे ही प्रभु चरण कमल के कीर्त्तन से सब रोग मिटे।
हैं आश्चर्य बड़ा कि झटपट काया में आरोग्य बढ़े॥2॥

संतप्तोत्तमकांचनक्षितिधर श्रीस्पर्द्धिगौरद्युते !
पुंसांत्वच्चरणप्रणामकरणात् पीड़ाः प्रयान्ति क्षयं ।।
उद्यद्भास्करविस्फु रत्करशत व्याघातनिष्कासिता ।
नानादेहि विलोचनद्युतिहरा शीघ्रं यथा शर्वरी ॥3॥

स्वर्णगिरी से ईर्ष्या करती मानो प्रभु की पीत विभा।
ऐसे प्रभु को नमस्कार कर होती पीड़ा शीघ्र विदा॥
जैसे काली रात सभी की नेत्रकांति हरने वाली।
क्षय होती वो रात शीघ्र ही देख उदित रवि की लाली॥3॥

त्रैलोक्येश्वरभंगलब्धविजयादत्यन्तरौद्रात्मकान्-
नानाजन्मशतान्तरेषु पुरतो जीवस्य संसारिणः ।।
को वा प्रस्खलतीह केन विधिना कालोग्रदावानला-
न्न स्याच्चेत्तव पादपद्मयुगल-स्तुत्यापगावारणम् ॥4॥

इंद्रादिक के क्षय से विजयी मृत्युरूप दावानल से।
कौन बचे किस विध इस जग में बहु जन्मों के दल-दल से॥
किन्तु मृत्यु-अग्नि से भी वे तिर जाते हैं संसारी।
जिनके आगे तव चरणों की संस्तुति रूप नदी न्यारी॥4॥

लोकालोक निरंतरप्रवितत-ज्ञानैकमूर्ते ! विभो !
नानारत्नपिनद्धदंड रुचिर-श्वेतातपत्रत्रय ।।

34

त्वत्पादद्वयपूतगीतरवतः शीघ्रं द्रवन्त्यामया।
दर्पाध्मातमृगेन्द्रभीमनिनदाद्वन्या यथा कुञ्जराः॥5॥

लोकालोक प्रवर्तज्ञान ही अनुपम मूरत है जिनकी।
रत्नदंडमय श्वेत छत्र की महासपंदा हैं जिनकी॥
ऐसे जिनपद की गाथा गा रोग शीघ्र भग जाते हैं।
सिंहगर्जना सुनकर वन के हाथी ज्यों भग जाते हैं॥5॥

दिव्यस्त्रीनयनाभिराम विपुलश्रीमेरु चूड़ामणे !
भास्वद्बालदिवाकरद्युतिहर ! प्राणीष्ट भामंडल !॥
अव्याबाधमचिन्त्यसारमतुलं त्यक्तोपमं शाश्वतं।
सौख्यं तवच्चरणारविंदयुगल-स्तुत्यैव संप्राप्यते॥6॥

शिवलक्ष्मीपति तुम हो प्यारे सुरकन्या की अंखियों को।
बालसूर्यद्युतिहारक जिनका भामंडल प्यारा सबको॥
शाश्वत अतुल अचिन्त्यसार सुख जो अबाध वा अनुपम हैं।
उसे आपके चरण कमल की संस्तुति से पाते हम हैं॥6॥

यावन्नोदयते प्रभापरिकरः श्री भास्करो भासयं।
स्तावद् धारयतीह पंकजवनं निद्रातिभारश्रमम्॥
यावत्त्वच्चरणद्वयस्य भगवन्न स्यात्प्रसादोदय-
स्तावज्जीवनिकाय एष वहति प्रायेण पापं महत्॥7॥

जैसे सूर्यकिरण को पाकर कमल सदा विकसित रहता।
वैसे ही प्रभु सूर्य किरण पा भक्त सदा पुलकित रहता॥
भविप्राणी जिन चरण कमल से सम्यग्दर्शन पाते हैं।
बहु पापों का क्षय करने हम द्वय चरणों को ध्याते हैं॥7॥

शांतिं शांति जिनेन्द्र ! शांतमनसस्त्वत्पादपद्माश्रयात्।
संप्राप्ताः पृथिवीतलेषु बहवः शांत्यर्थिनः प्राणिनः॥
कारुण्यान्ममभाक्तिकस्यचविभो ! दृष्टिंप्रसन्नां कुरु।
त्वत्पादद्वयदैवतस्य गदतः शान्त्यष्टकं भक्तितः॥8॥

हे शांतिप्रभु ! इस धरती पर शांतचित्त हैं जो सज्जन।
शांति वरें वे शांत्यार्थी सब पाकर प्रभु की चरण शरण॥
तव पद हैं आराध्य सभी के दया करो सब भक्तों पर।
हो मेरा सम्यक्त्व अमलतम पावन शांत्यष्टक पढ़कर॥8॥

(गीता छंद)

इस शांति अष्टक में बसी सुख-शांति की संजीवनी।
पढ़-सुन जिसे हर जीव की सुख-शांतिमय हो जीवनी॥
श्री पूज्यपाद मुनीन्द्र ने ये शांति भक्ति रची भली।
करके सृजन इस भक्ति का फिर नेत्र ज्योत उन्हें मिली॥9॥

॥ इति शांत्यष्टक ॥

अष्टक *(मत्तगयंद छंद)*

(तर्ज : वीर हिमाचल तें निकसि)

शांति प्रभो जिन बालक हैं अरु इंद्र-शचि सम श्रावक सारे।
श्री जिन का अभिषेक करें हम स्वस्तिक रूप सजा घट[1] न्यारे॥
शांति प्रदायक शांति विधायक सोलहवें प्रभु शांति हमारे।
शांति विधान करें प्रभुजी हम नष्ट करो सब कष्ट हमारे॥1॥

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः जगदापद्विनाशनसमर्थाय ह्रीं शांतिनाथाय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

गंधकुटी प्रभु की अतिसुंदर मंद सुगंध जहाँ बहती है।
गंध चढ़ा करके प्रभु को भव बंधन की विपदा कटती है॥ शांति... ॥2॥

ॐ भ्रां भ्रीं भ्रूं भ्रौं भ्रः जगदापद्विनाशनसमर्थाय ह्रीं शांतिनाथाय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षअगोचर[2] अक्षय आसन सिद्ध सिंहासन के तुम स्वामी।
अक्षत भेंट करें प्रभुजी हम अक्षयदान करो जगनामी॥ शांति... ॥3॥

1. कलश, 2. जो इन्द्रियों से न जाना जायें।

36

ॐ म्रां म्रीं म्रूं म्रौं म्रः जगद्वापद्विनाशनसमर्थाय ह्रीं शान्तिनाथाय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

काम बला बलवान बड़ी प्रभु काम भला करने नहीं देवे।
पुष्प चढ़ाकर के प्रभु को हम दुर्धर काम बला हर लेवे।।
शांति प्रदायक शांति विधायक सोलहवें प्रभु शांति हमारे।
शांति विधान करें प्रभुजी हम नष्ट करो सब कष्ट हमारे।।4।।

ॐ रां रीं रूं रौं रः जगदापद्विनाशनसमर्थाय ह्रीं शांतिनाथाय कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

चारुचकोर[1] जिनेश्वर को हम चारु चरू पकवान्न चढ़ावें।
रंग भरे रसदार बड़े शुभ नेवज से भज पाप नशावें।। शांति...।।5।।

ॐ घ्रां घ्रीं घ्रूं घ्रौं घ्रः जगदापद्विनाशनसमर्थाय ह्रीं शांतिनाथाय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोलह-सोलह दीप जलाकर सोलहवें प्रभु को हम ध्यायें।
सोलहकारण भाव जगाकर सोलह कर्म कषाय नशायें।। शांति...।।6।।

ॐ झ्रां झ्रीं झ्रूं झ्रौं झ्रः जगदापद्विनाशनसमर्थाय ह्रीं शांतिनाथाय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

पुण्य किया प्रभु क्या तुमने जिससे पद तीन वरें सुखदाई।
पुण्य निधी वरने प्रभुजी हमने तुमको यह धूप चढ़ाई।। शांति...।।7।।

ॐ श्रां श्रीं श्रूं श्रौं श्रः जगदापद्विनाशनसमर्थाय ह्रीं शांतिनाथाय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

माँग किये बिन ही जिनसे हर इच्छित वस्तु हमें मिलती है।
श्रेष्ठ हरे फल से उनको भज कर्मन् की प्रकृति हिलती है।। शांति...।।8।।

ॐ ख्रां ख्रीं ख्रूं ख्रौं ख्रः जगदापद्विनाशनसमर्थाय ह्रीं शांतिनाथाय महामोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

हे कुरुवंशज ! काश्यपगोत्रज हे षटखंडजयी जिनराजा।
अर्घ समर्पित है तुमको भवपार करो भवतारजिहाजा।। शांति...।।9।।

1. सुन्दर

37

ॐ अ ह्रां सि ह्रीं आ ह्रूं उ ह्रौं सा ह्रः जगदापद्विनाशनसमर्थाय ह्रीं शांतिनाथाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छंद)

श्री शांतिप्रभु हिमवान[1] हैं, जो शांति गंग बहा रहे।
भज शांतिधारा से उन्हें, शुभ पुष्प हम बरसा रहे॥
श्री शांतिनाथ विधान से, सारे दुःखों का अंत हो।
हे शांति प्रभु ! कर दो कृपा, जिनधर्म ध्वज जयवंत हो॥

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

अथ शांतिनाथ स्तवन

(त्रोटक छंद)

जय शांतिप्रदायक शांति प्रभो।
जय शांति विधायक शांति प्रभो॥
जय शांति सुधाकर शांति प्रभो।
जय शांति प्रभो जय शांति प्रभो॥1॥

जय तीर्थप्रवर्त्तक शांति प्रभो।
जय चक्रप्रवर्त्तक शांति प्रभो॥
जय श्री रतिनायक[2] शांति प्रभो।
जय शांति प्रभो जय शांति प्रभो॥2॥

जय धर्मप्रचारक शांति प्रभो।
जय बुद्धिविशारद शांति प्रभो॥
जय नायक ज्ञायक शांति प्रभो।
जय शांति प्रभो जय शांति प्रभो॥3॥

1. हिमालय पर्वत, 2. कामदेव।

38

जय रागनिवारक शांति प्रभो।
जय द्वेषविदारक शांति प्रभो॥
जय कर्मविघातक शांति प्रभो।
जय शांति प्रभो जय शांति प्रभो॥4॥

जय काव्यकलापति शांति प्रभो।
जय नाट्यकलापति शांति प्रभो॥
जय श्रीकमलापति शांति प्रभो।
जय शांति प्रभो जय शांति प्रभो॥5॥

जय कष्टसंहारक शांति प्रभो।
जय रोगविनाशक शांति प्रभो॥
जय विघ्न विनायक शांति प्रभो।
जय शांति प्रभो जय शांति प्रभो॥6॥

जय संकटमोचक शांति प्रभो।
जय पापविमोचक शांति प्रभो॥
जय आत्मविशोधक शांति प्रभो।
जय शांति प्रभो जय शांति प्रभो॥7॥

जय ध्येयशिरोमणि शांति प्रभो।
जय ज्ञेयमहामणि शांति प्रभो॥
जय मुक्तिरमापति शांति प्रभो।
जय शांति प्रभो जय शांति प्रभो॥8॥

(दोहा)

शांतिनाथ की भक्ति का, पावन शांति प्रसाद।
पढ़-सुनकर जिसको मिटे, सर्व पाप अवसाद॥

39

प्रथम वलय

अथ प्रथमवलयमध्ये अष्टकोष्ठोपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(शेर छंद)

हं बीज युक्त शांतिनाथ शांति के धनी।
जो हैं अशोक वृक्ष प्रातिहार्य से गुणी।।
प्रभु को अशोक वृक्ष चढ़ा शोक सब टले।
फिर अष्ट प्रातिहार्य युक्त आप्त[1] पद मिले।।1।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथाय अशोकतरुसत्प्रातिहार्यमंडिताय अशोकतरुशोभनपदप्रदाय हम्ल्व्र्यूं बीजाय सर्वोपद्रवशांतिकराय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भं बीज युक्त शांतिनाथ शांति दे रहे।
जिन पर गगन से देव पुष्पवृष्टि कर रहे।।
कर पुष्प वृष्टि मन सभी के पुष्प सम खिले।। फिर...।।2।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथाय सुरपुष्पवृष्टिसत्प्रातिहार्यमंडिताय सुरपुष्पवृष्टिशोभनपदप्रदाय भम्ल्व्र्यूं बीजाय सर्वोपद्रवशांतिकराय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मं बीज युक्त शांतिजिन अशांत लेश ना।
पूर्वापराविरुद्ध जिनकी दिव्य देशना।।
हम अर्चना में दिव्य ध्वनि प्रातिहार्य ले।। फिर...।।3।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथाय दिव्यध्वनिसत्प्रातिहार्यमंडिताय दिव्यध्वनिशोभनपदप्रदाय मम्ल्व्र्यूं बीजाय सर्वोपद्रवशांतिकराय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रं बीजयुक्त शांतिनाथ शांति बाँटते।
जिन पर चँवर ढुराके यक्ष पाप काटते।।
प्रभु पर चँवर ढुरा हमें भी श्रेष्ठगति मिले।। फिर...।।4।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथाय चामरोज्ज्वलसत्प्रातिहार्यमंडिताय चामरोज्ज्वलशोभनपदप्रदाय रम्ल्व्र्यूं बीजाय सर्वोपद्रवशांतिकराय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

---

1. अरिहंत।

40

घं बीजयुक्त शांतिनाथ शांति मंदिरम्।
जो स्वर्ण सिंहासन पे अधर श्रेष्ठ सुंदरम्॥
प्रभुवर को सिंहासन पे बिठा राज्यसुख मिले ॥
फिर अष्ट प्रातिहार्य युक्त आप्त पद मिले॥5॥

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथाय सिंहासनसत्प्रातिहार्यमंडिताय सिंहासनप्रातिहार्यशोभनपदप्रदाय घम्ल्व्र्यूं बीजाय सर्वोपद्रवशांतिकराय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

झं बीजयुक्त शांतिनाथ शांति से सजें।
जिनके द्युतिमंडल[1] से कोटि सूर्य भी लजे॥
प्रभु को द्युतिमंडल चढ़ाय आपदा टले ॥ फिर...॥6॥

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथाय भामंडलसत्प्रातिहार्यमंडिताय भामंडलप्रातिहार्यशोभनपदप्रदाय झम्ल्व्र्यूं बीजाय सर्वोपद्रवशांतिकराय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सं बीजयुक्त शांतिनाथ शांत सर्वदा।
जिनके समवशरण में दुंदुभि बजे सदा॥
प्रभुवर को दुंदुभि से पूज सर्व सुख मिले ॥ फिर...॥7॥

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथाय दुंदुभिसत्प्रातिहार्यमंडिताय दुंदुभिप्रातिहार्यशोभनपदप्रदाय सम्ल्व्र्यूं बीजाय सर्वोपद्रवशांतिकराय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

खं बीजयुक्त शांतिनाथ शांति सरोवर।
जिनकी त्रिछत्ररूप श्रेष्ठ बाह्य धरोहर॥
त्रय छत्र चढ़ा छत्र-छाँव नाथ की मिले ॥ फिर...॥8॥

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथाय छत्रत्रयसत्प्रातिहार्यमंडिताय छत्रत्रयशोभनपदप्रदाय सर्वविघ्नहराय खम्ल्व्र्यूं बीजाय सर्वोपद्रवशांतिकराय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ (गीता छंद)

चक्रेश शांति जिनेश के, वसु प्रातिहार्य विशेष हैं।
बीजाक्षरों से पूज्यतम, जिनका दिगम्बर वेष है॥
श्री शांतिनाथ विधान से, सारे दुःखों का अंत हो।
हे शांति प्रभु ! कर दो कृपा, जिनधर्म ध्वज जयवंत हो॥

1. भामंडल।

41

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथाय प्रातिहार्य अष्टसहिताय बीजाष्टमंडनमंडिताय सर्वविघ्नशांतिकराय जलादि पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री शांतिप्रभु हिमवान हैं, जो शांति गंग बहा रहे।
भज शांतिधारा से उन्हें, शुभ पुष्प हम बरसा रहे॥
श्री शांतिनाथ विधान से, सारे दुःखों का अंत हो।
हे शांति प्रभु ! कर दो कृपा, जिनधर्म ध्वज जयवंत हो॥

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

द्वितीय वलय

अथ द्वितीयवलयमध्ये षोडशकोष्ठोपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(नरेन्द्र छंद)

वीतराग सर्वज्ञ देव जो हित उपदेश कहें जग को।
वे अरिहंत जिनेश कहाते जिनवाणी कहती हमको॥
उन अरिहंतों को भजने हम कहते वंदे शांति जिनम्।
अर्घ चढ़ाकर बोलें हम सब ॐ णमो अरिहंताणं॥1॥

ॐ ह्रीं जगदापद्विनाशनहेतवे भरत-ऐरावत-विदेह आदि शतैकसप्ततित्रक्षेत्रार्यखण्डे भूतभविष्यत्वर्तमान अर्हत्परमेष्ठिपदपंकजे सन्मतिसद्भक्ति उपेतामलतरखंडोज्झित-निदानबंधनाय कृतेज्याय श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुणस्थान चौदहवें में जब अर्हत् कर्म विनाश करें।
अविग्रह गति से सिद्धालय में बनकर सिद्ध प्रवास करें॥
ऐसे सिद्धों को भजने हम कहते वंदे शांति जिनम्।
अर्घ चढ़ाकर बोलें हम सब ॐ णमो श्री सिद्धाणं॥2॥

ॐ ह्रीं जगदापद्विनाशनहेतवे भरत-ऐरावत-विदेह आदि शतैकसप्ततिर्क्षेत्रार्यखण्डे भूतभविष्यत्वर्तमान सिद्धपरमेष्ठिपदपंकजे सन्मतिसद्भक्ति उपेतामलतरखंडोज्झित-निदानबंधनाय कृतेज्याय श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

42

हाथ रखे घट में कुम्हार ज्यों घट के ऊपर चोंट करे।
ऐसे ही आचार्य प्रेम से शिष्यों की सब खोट हरें॥
उन आचार्यों को भजने हम कहते वंदे शांति जिनम्।
अर्घ चढ़ाकर बोलें हम सब ॐ णमो आइरियाणं॥3॥

ॐ ह्रीं जगदापद्विनाशनहेतवे भरत-ऐरावत-विदेह आदि शतैकसप्ततिर्क्षेत्रार्यखण्डे भूतभविष्यत्वर्तमान आचार्यपरमेष्ठिपदपंकजे सन्मतिसद्भक्ति उपेतामलतरखंडोज्झित- निदानबंधनाय कृतेज्याय श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भव रोगी के भव रोगों को उपाध्याय ही नष्ट करें।
आगम की आरोग्यवर्द्धनी देकर सबको स्वस्थ करें॥
उन पाठक[1] गुरु को भजने हम कहते वंदे शांति जिनम्॥
अर्घ चढ़ाकर बोलें हम सब ॐ णमो उवज्झायाणं॥4॥

ॐ ह्रीं जगदापद्विनाशनहेतवे भरत-ऐरावत-विदेह आदि शतैकसप्ततिर्क्षेत्रार्यखण्डे भूतभविष्यत्वर्तमान उपाध्यायपरमेष्ठिपदपंकजे सन्मतिसद्भक्ति उपेतामलतरखंडोज्झित-निदानबंधनाय कृतेज्याय श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विषय आस को दास बना जो हैं उदास भव भोगों से।
उन मुनियों को नमन् करें हम हाथ जोड़ त्रय योगों से॥
उन मुनिराजों को भजने हम कहते वंदे शांति जिनम्।
अर्घ चढ़ाकर बोलें हम सब णमो लोए सव्व साहूणं ॥5॥

ॐ ह्रीं जगदापद्विनाशनहेतवे भरत-ऐरावत-विदेह आदि शतैकसप्ततिर्क्षेत्रार्यखण्डे भूतभविष्यत्वर्तमान सर्वसाधुपरमेष्ठिपदपंकजे सन्मतिसद्भक्ति उपेतामलतरखंडोज्झित-निदानबंधनाय कृतेज्याय श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिससे भव वर्त्तन रह जाता पुद्गलअर्द्ध[2] परावर्तन।
कहलाता वो अष्ट अंगयुत सर्वश्रेष्ठ सम्यग्दर्शन॥

1. उपाध्याय, 2. अर्द्धपुद्गल परावर्तन।

43

सम्यग्दर्शन को पाने हम कहते वंदे शांति जिनम्।
अर्घ चढ़ाकर बोलें हम सब ॐ णमो शुचि सम्यक्त्वं॥6॥

ॐ ह्रीं जगदापद्विनाशनहेतवे शुद्धसम्यक्त्व अमलतरखंडोज्झितनिदानबंधनाय कृतेज्याय श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आगम पर दृढ़ श्रद्धानी ही सम्यक्ज्ञानी बनता है।
सम्यक्ज्ञानी ही अनुक्रम से केवलज्ञानी बनता है॥
सम्यक्ज्ञानी बनने हम भी कहते वंदे शांति जिनम्।
अर्घ चढ़ाकर बोलें हम सब ॐ णमो सम्यक्ज्ञानम्॥7॥

ॐ ह्रीं जगदापद्विनाशनहेतवे सम्यग्ज्ञान अमलतरखंडोज्झितनिदानबंधनाय कृतेज्याय श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समिति महाव्रत तीन गुप्ति से, तेरह विध चारित्र बने।
इस चरित्र का इत्र लगाकर, भव्य सिद्ध के मित्र बने॥
सम्यक्चारित को पाने हम कहते वंदे शांति जिनम्।
अर्घ चढ़ाकर बोलें हम सब ॐ णमो सम्यक्चरितम्॥8॥

ॐ ह्रीं जगदापद्विनाशनहेतवे सम्यक्चारित्रामलतरखंडोज्झितनिदानबंधनाय कृतेज्याय श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञान नहीं होने देता वो ज्ञानावरण कहाता है।
पाँच भेद धर जीवों से यह दृढ़ संबंध बनाता है॥
ज्ञानावरण नशाने हम सब कहते वंदे शांति जिनम्।
अर्घ चढ़ाकर बोलें हम सब ॐ णमो केवलज्ञानम्॥9॥

ॐ ह्रीं ज्ञानावरणकर्मबंधबंधनकृते सतितत्कर्मविपाकोद्भवोपद्रवनिवारकाय श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चक्षु अचक्षु आदिक नौविध कर्म दर्शनावरण बड़ा।
क्षायिक दर्शन के होने में बाधक बन ये कर्म खड़ा॥
कर्म दर्शनावरण नशाने कहते वंदे शांति जिनम्।
अर्घ चढ़ाकर बोलें हम सब ॐ णमो क्षायिक दर्शम्[1]॥10॥

1. दर्शन।

44

ॐ ह्रीं दर्शनावरणकर्मबंधबंधनकृते सतितत्कर्मविपाकोद्भवोपद्रवनिवारकाय श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म वेदनी छलिया जैसा पता चले ना इसका छल।
सुख की थोड़ी छाँव दिखाकर करता दुख की धूप प्रबल॥
कर्म वेदनी विनशाने हम कहते वंदे शांति जिनम्।
अर्घ चढ़ाकर बोलें हम सब ॐ णमो अव्याबाधम्॥11॥

ॐ ह्रीं वेदनीयकर्मबंधबंधनकृते सतितत्कर्मविपाकोद्भवोपद्रवनिवारकाय श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म मोहनी बना ढ़ोलिड़ा, ढ़ोल बने हम संसारी।
अट्ठाइस भेदों के डंडे मारे जो हम पर भारी॥
मोहनीय विनशाने हम सब कहते वंदे शांति जिनम्।
अर्घ चढ़ाकर बोलें हम सब ॐ णमो क्षायिक सौख्यम्॥12॥

ॐ ह्रीं प्रचण्डमोहनीयकर्मबंधबंधनकृते सतितत्कर्मविपाकोद्भवोपद्रवनिवारकाय श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भव पिंजर में आयुकर्म ही हर प्राणी को कैद करे।
नर नारक पशु देव बनाकर जीवों में ये भेद करे॥
आयुकर्म विनशाने हम सब कहते वंदे शांति जिनम्।
अर्घ चढ़ाकर बोलें हम सब ॐ णमो गुण अवगहणं॥13॥

ॐ ह्रीं आयुकर्मबंधबंधनकृते सतितत्कर्मविपाकोद्भवोपद्रवनिवारकाय श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाम कर्म की प्रकृति तिरानव पुण्य पाप से मिली-जुली।
इसी कर्म से होती सबके तन की रचना बुरी भली॥
नामकर्म विनशाने हम सब कहते वंदे शांति जिनम्।
अर्घ चढ़ाकर बोलें हम सब ॐ णमो गुण सूक्ष्मत्त्वं॥14॥

ॐ ह्रीं नामकर्मबंधबंधनकृते सतितत्कर्मविपाकोद्भवोपद्रवनिवारकाय श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

45

गोत्र कर्म है पक्का बनिया, जो जैसे को तैसा दे।
पुण्य करो तो उच्च गोत्र दे, नीच गोत्र पापी को दे॥
गोत्रकर्म विनशाने हम सब कहते वंदे शांति जिनम्।
अर्घ चढ़ाकर बोलें हम सब णमो अगुरुलघु दिव्यगुणम्॥15॥

ॐ ह्रीं गोत्रकर्मबंधबंधनकृते सतितत्कर्मविपाकोद्भवोपद्रवनिवारकाय श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हर प्राणी चाहे कि उसके सर्व कार्य निर्विघ्न सरें[1]।
लेकिन सब कार्यों में पाँचों अंतराय ही विघ्न करें॥
अंतराय विनशाने हम सब कहते वंदे शांति जिनम्।
अर्घ चढ़ाकर बोलें हम सब ॐ णमो क्षायिक वीर्यम् ॥16॥

ॐ ह्रीं अंतरायकर्मबंधबंधनकृते सतितत्कर्मविपाकोद्भवोपद्रवनिवारकाय श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ (गीता छंद)

आराधना में प्रार्थना, सुनना हमारी शांति जिन !।
परमेष्ठि वा त्रय रत्न की, होवे सुभक्ति निदान बिन॥
श्री शांतिनाथ विधान से आठों करम का अंत हो।
हे शांति प्रभु ! कर दो कृपा, जिनधर्म ध्वज जयवंत हो॥

ॐ ह्रीं पंचपरमेष्ठि पददायक-दर्शनज्ञानचारित्रकारक कर्माष्टकवारक श्री शांतिनाथाय षोड़शांग द्वितीयवलयमध्ये पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री शांतिप्रभु हिमवान हैं, जो शांति गंग बहा रहे।
भज शांतिधारा से उन्हें, शुभ पुष्प हम बरसा रहे॥
श्री शांतिनाथ विधान से, सारे दुःखों का अंत हो।
हे शांति प्रभु ! कर दो कृपा, जिनधर्म ध्वज जयवंत हो॥

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

1. बने।

46

तृतीय वलय

अथ तृतीयवलयमध्ये द्वात्रिंशत्कोष्ठोपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(गीता छंद)

श्री शांतिनाथ विधान का, मंडल मनोज्ञ बना यहाँ।
जिनभक्ति के अनुराग से, सब देवगण आओ यहाँ॥
परिवार वैभव वाद्य ले, हे देव ! शीघ्र पधारिये।
सम्यक्त्व वर्धित भक्ति से, सुर[1] जन्म आप सुधारिये॥

ॐ ह्रीं श्री द्वात्रिंशत देवेन्द्राः आगच्छत आगच्छत परिपुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

(चामर छंद)

शांतिनाथ द्वार पे महासुरेन्द्र आ रहे।
शांतिमंत्र से जिनाभिषेक वे रचा रहे॥
भावनेन्द्र पूज्य शांतिनाथ शांति दो हमें।
विघ्न शांति हेतु भक्त शांतिनाथ को नमें॥1॥

ॐ ह्रीं श्री असुरकुमारेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वरप्रदाय श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नागदेव-वृंद[2] भी फणीन्द्र संग आ रहे।
पूजने जिनंद को मृदंग संग ला रहे॥
हे फणीन्द्र पूज्य शांतिनाथ शांति दो हमें।
विघ्न शांति हेतु भक्त शांतिनाथ को नमें॥2॥

ॐ ह्रीं श्री धरणेन्द्रकुमारेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वरप्रदाय श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री सुपर्ण इन्द्र पर्ण[3]-पुष्प आदि ला रहे।
विक्रिया रचा अनेक अर्चना रचा रहे॥
हे सुपर्ण पूज्य शांतिनाथ शांति दो हमें।
विघ्न शांति हेतु भक्त शांतिनाथ को नमें॥3॥

ॐ ह्रीं श्री सुपर्णकुमारेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वरप्रदाय श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

---

1. देव, 2. समूह, 3. पर्ण-पत्ते।

47

द्वीप इन्द्र संग देव देवियाँ पधारते।
शांतिनाथ की महान आरती उतारते॥
द्वीप इन्द्र पूज्य शांतिनाथ शांति दो हमें।
विघ्न शांति हेतु भक्त शांतिनाथ को नमें॥4॥

ॐ ह्रीं श्री द्वीपकुमारेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वरप्रदाय श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री महोदधीन्द्र का कुटुम्ब पुण्यवान है।
गद्य पद्य रूप गा रहा जिनेन्द्र गान है॥
उदधि इन्द्र पूज्य शांतिनाथ शांति दो हमें।
विघ्न शांति हेतु भक्त शांतिनाथ को नमें॥5॥

ॐ ह्रीं श्री उदधिकुमारेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वरप्रदाय श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देव के समूह मध्य श्री स्तनित सुरेन्द्र हैं।
आ रहे विधान में जहाँ सभी सुरेन्द्र हैं॥
स्तनित इन्द्र पूज्य शांतिनाथ शांति दो हमें।
विघ्न शांति हेतु भक्त शांतिनाथ को नमें॥6॥

ॐ ह्रीं श्री स्तनितकुमारेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वरप्रदाय श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विद्युतेन्द्र भी स्वजाति देव संग आ रहे।
शांति भक्ति बोल शांति अर्चना रचा रहे॥
विद्युतेन्द्र पूज्य शांतिनाथ शांति दो हमें।
विघ्न शांति हेतु भक्त शांतिनाथ को नमें॥7॥

ॐ ह्रीं श्री विद्युतकुमारेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वरप्रदाय श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दिक्कुमार इन्द्र का कुटुंब आज आ रहा।
सर्वश्रेष्ठ सात्त्विकी[1] जिनार्चना रचा रहा॥

1. जो अर्चना घर के मुखिया (राजा आदि के द्वारा) स्वयं की जाये।

48

दिक्कुमार पूज्य शांतिनाथ शांति दो हमें।
विघ्न शांति हेतु भक्त शांतिनाथ को नमें॥8॥

ॐ ह्रीं श्री दिक्कुमारेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वरप्रदाय श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अग्नि इन्द्र अग्नि देव संग मंत्र बोलते।
शांति यज्ञ अग्नि में घृतादि[1] द्रव्य होमते॥
अग्नि इन्द्र पूज्य शांतिनाथ शांति दो हमें।
विघ्न शांति हेतु भक्त शांतिनाथ को नमें॥9॥

ॐ ह्रीं श्री अग्निकुमारेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वरप्रदाय श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वायु इन्द्र वायु के समान शीघ्र आ रहे।
पुष्प नेवजादि शांतिनाथ को चढ़ा रहे॥
वायु इन्द्र पूज्य शांतिनाथ शांति दो हमें।
विघ्न शांति हेतु भक्त शांतिनाथ को नमें॥10॥

ॐ ह्रीं श्री वायुकुमारेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वरप्रदाय श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

किन्नरेन्द्र की महान छावनी लुभावनी।
गा रही जिनेन्द्र भक्ति हेतु गीत लावनी[2]॥
किन्नरेन्द्र पूज्य शांतिनाथ शांति दो हमें।
विघ्न शांति हेतु भक्त शांतिनाथ को नमें॥11॥

ॐ ह्रीं श्री किन्नरेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वरप्रदाय श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देवसंग ढोल झांझ किंपुरुष बजा रहे।
शांतिनाथ का पुराण छंद बद्ध गा रहे॥

1. घी आदि, 2. संगीत का एक प्रकार।

49

किंपुरुष पूज्य शांतिनाथ शांति दो हमें।
विघ्न शांति हेतु भक्त शांतिनाथ को नमें॥12॥

ॐ ह्रीं श्री किंपुरुषेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वरप्रदाय श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री महोरगेन्द्र की समस्त पट्टरानियाँ[1]।
गा रही जिनेन्द्र शांतिनाथ की कहानियाँ॥
हे महोरगेन्द्र पूज्य ! नाथ शांति दो हमें।
विघ्न शांति हेतु भक्त शांतिनाथ को नमें॥13॥

ॐ ह्रीं श्री महोरगेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वरप्रदाय श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वानदेव[2] के समस्त भेद में चतुर्थ जो।[3]
श्री जिनेन्द्र की शुभार्चना करें सहर्ष वो॥
व्यंतरेन्द्र पूज्य शांतिनाथ शांति दो हमें।
विघ्न शांति हेतु भक्त शांतिनाथ को नमें॥14॥

ॐ ह्रीं श्री गंधर्वेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वरप्रदाय श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यक्षराज संग सर्व यक्षिणी पधारती।
शांतिनाथ को विशेष भक्ति से पुकारती॥
यक्ष इन्द्र पूज्य शांतिनाथ शांति दो हमें।
विघ्न शांति हेतु भक्त शांतिनाथ को नमें॥15॥

ॐ ह्रीं श्री यक्षेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वरप्रदाय श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

राक्षसेन्द्र संग देव दुंदुभि बजा रहे।
शांति भक्ति हेतु सर्व देव को बुला रहे॥

1. महादेवी, 2. व्यंतरदेव, 3. गंधर्व इन्द्र।

50

राक्षसेन्द्र पूज्य शांतिनाथ शांति दो हमें।
विघ्न शांति हेतु भक्त शांतिनाथ को नमें॥16॥

ॐ ह्रीं श्री राक्षसेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वरप्रदाय श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भूत इन्द्र संग भक्ति लीन देवसुंदरी[1]।
धार शांतिनाथ नाम की सुवर्णमुंदरी[2]॥
भूत इन्द्र पूज्य शांतिनाथ शांति दो हमें।
विघ्न शांति हेतु भक्त शांतिनाथ को नमें॥17॥

ॐ ह्रीं श्री भूतेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वरप्रदाय श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री पिशाचइंद्र भी सुवाच्य गुनगुना रहे।
शंभु-चामरादि छंद में विधान गा रहे॥
श्री पिशाचइंद्र पूज्य नाथ शांति दो हमें।
विघ्न शांति हेतु भक्त शांतिनाथ को नमें॥18॥

ॐ ह्रीं श्री पिशाचेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वरप्रदाय श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्योतिषेन्द्र देव संग अर्चना रचा रहे।
स्वस्तिकादि से सजी महाध्वजा चढ़ा रहे॥
चन्द्र इन्द्र पूज्य शांतिनाथ शांति दो हमें।
विघ्न शांति हेतु भक्त शांतिनाथ को नमें॥19॥

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वरप्रदाय श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विद्यमान हो विमान सूर्य इन्द्र आ रहे।
शांति सूर्य की विभा विलोक[3] के लजा रहे॥
सूर्य इन्द्र पूज्य शांतिनाथ शांति दो हमें।
विघ्न शांति हेतु भक्त शांतिनाथ को नमें॥20॥

---

1. देवियाँ, 2. सोने की अंगुठी, 3. देखके।

51

ॐ ह्रीं श्री भास्करेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वरप्रदाय श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आद्यकल्प[1] के सुरेन्द्र अष्ट द्रव्य ला रहे।
तांडवादि नृत्य से जिनेन्द्र को चढ़ा रहे॥
हे शचीन्द्र[2] पूज्य ! शांतिनाथ शांति दो हमें।
विघ्न शांति हेतु भक्त शांतिनाथ को नमें॥21॥

ॐ ह्रीं श्री सौधर्मेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वरप्रदाय श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आ रही ईशान इन्द्र संग देव अप्सरा।
भक्ति से निभाय आर्ष मार्ग की परम्परा॥
हे ईशान इन्द्र पूज्य ! नाथ शांति दो हमें।
विघ्न शांति हेतु भक्त शांतिनाथ को नमें॥22॥

ॐ ह्रीं श्री ईशानेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वरप्रदाय श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सानतेन्द्र आ जिनेन्द्र की परिक्रमा करें।
विश्वशांति हेतु शांतिनाथअर्चना करें॥
सानतेन्द्र पूज्य शांतिनाथ शांति दो हमें।
विघ्न शांति हेतु भक्त शांतिनाथ को नमें॥23॥

ॐ ह्रीं श्री सानत्कुमारेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वरप्रदाय श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री महेन्द्र दूध आदि पंच द्रव्य ला रहे।
श्लोक-मंत्र बोल शांतिनाथ पे ढुरा रहे॥
हे महेन्द्र पूज्य ! शांतिनाथ शांति दो हमें।
विघ्न शांति हेतु भक्त शांतिनाथ को नमें॥24॥

1. सौधर्मकल्प, 2. सौधर्म इन्द्र।

52

ॐ ह्रीं श्री माहेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वरप्रदाय श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ब्रह्म स्वर्ग से समस्त देव आज आ गये।
ब्रह्म इन्द्र संग शांति पाठ में समा गये॥
ब्रह्म इन्द्र पूज्य शांतिनाथ शांति दो हमें।
विघ्न शांति हेतु भक्त शांतिनाथ को नमें॥25॥

ॐ ह्रीं श्री ब्रह्मेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वरप्रदाय श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लान्तवेन्द्र सप्त-धान्य[1] से महार्चना करे।
सिद्ध-चैत्य-शांति-भक्ति गा उपासना करें॥
लांतवेन्द्र पूज्य शांतिनाथ शांति दो हमें।
विघ्न शांति हेतु भक्त शांतिनाथ को नमें॥26॥

ॐ ह्रीं श्री लांतवेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वरप्रदाय श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुक्र शक्र[2] स्वर्ग के विशेष द्रव्य ला रहे।
मेरु के समान ढेर-ढेर वे चढ़ा रहे॥
शुक्र इन्द्र पूज्य शांतिनाथ शांति दो हमें।
विघ्न शांति हेतु भक्त शांतिनाथ को नमें॥27॥

ॐ ह्रीं श्री शुक्रेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वरप्रदाय श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गीत मंडली बना शतार इन्द्र आ रहे।
रत्नचूर्ण से विधान मांडला बना रहे॥
हे शतार इन्द्र पूज्य ! नाथ शांति दो हमें।
विघ्न शांति हेतु भक्त शांतिनाथ को नमें॥28॥

ॐ ह्रीं श्री शतारेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वरप्रदाय श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

---

1. सप्त धान्य से माण्डला आदि बनाना भी आगम में पूजा बताया है। 2. इन्द्र।

53

आनतेन्द्र आन के सहस्त्ररूप धारते।
भक्ति से सहस्त्रनाम पाठ वे उचारते॥
आनतेन्द्र पूज्य शांतिनाथ शांति दो हमें।
विघ्न शांति हेतु भक्त शांतिनाथ को नमें॥29॥

ॐ ह्रीं श्री आनतेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वरप्रदाय श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्राणतेन्द्र प्राण प्राणनाथ[1] से हि जोड़ते।
प्राण छोड़ते परन्तु अर्चना न छोड़ते॥
प्राणतेन्द्र पूज्य शांतिनाथ शांति दो हमें।
विघ्न शांति हेतु भक्त शांतिनाथ को नमें॥30॥

ॐ ह्रीं श्री प्राणतेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वरप्रदाय श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सप्त सैन्य युक्त आरणेन्द्र अर्चना करें।
आप्तभाष्य[2] षष्ठ अंग से महार्चना करें॥
आरणेन्द्र पूज्य शांतिनाथ शांति दो हमें।
विघ्न शांति हेतु भक्त शांतिनाथ को नमें॥31॥

ॐ ह्रीं श्री आरणेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वरप्रदाय श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अच्युतेन्द्र नाथ का गुणानुवाद गा रहे।
पूज्यपाद के समान शांति भक्ति गा रहे॥
अच्युतेन्द्र पूज्य शांतिनाथ शांति दो हमें।
विघ्न शांति हेतु भक्त शांतिनाथ को नमें॥32॥

ॐ ह्रीं श्री अच्युतेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वरप्रदाय श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

---

1. भगवान, 2. अर्हंत द्वारा कहा।

54

पूर्णार्घ (गीता छंद)

वैमानिकों युत भवनत्रिक, ये सब चतुर्विध देव हैं।
इन देवगण से सेव्य नित, श्री शांतिनाथ सदैव हैं॥
श्री शांतिनाथ विधान से, सारे दुःखों का अंत हो।
हे शांति प्रभु ! कर दो कृपा, जिनधर्म ध्वज जयवंत हो॥

ॐ ह्रीं चतुर्णिकायदेवेन्द्रपूजित श्री शांतिनाथाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री शांतिप्रभु हिमवान हैं, जो शांति गंग बहा रहे।
भज शांतिधारा से उन्हें, शुभ पुष्प हम बरसा रहे॥
श्री शांतिनाथ विधान से, सारे दुःखों का अंत हो।
हे शांति प्रभु ! कर दो कृपा, जिनधर्म ध्वज जयवंत हो॥

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

चतुर्थ वलय

अथ चतुर्थवलय मध्ये चतुःषष्ठिकोष्ठोपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(गीता छंद)

कपि सम चपल यह दुष्ट मन हर पाप का कीड़ा बने।
यह येन केन प्रकार से दे मानसिक पीड़ा हमें॥
हे शांति प्रभु ! वरदान दो इन सब दुःखों की शांति हो।
परिवार विश्व समाज में सुख-शांति ही सुख-शांति हो॥1॥

ॐ ह्रीं मानसिक पापोद्भवोपद्रवनिवारकाय श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मधुवच अगर हैं औषधि तो कटु वचन तलवार सम।
दुर्वचन कह दुःख-दर्द सह भूलें मधुर व्यवहार हम॥
हे शांति प्रभु ! वरदान दो इन सब दुःखों की शांति हो।
परिवार विश्व समाज में सुख-शांति ही सुख-शांति हो॥2॥

ॐ ह्रीं वाचनिक पापोद्भवोपद्रवनिवारकाय श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

55

तन धर्म का साधन मगर साधन बना ये पाप का।
इस हेतु तन भाजन बना संताप रोग विलाप का।।
हे शांति प्रभु ! वरदान दो इन सब दुःखों की शांति हो।
परिवार विश्व समाज में सुख-शांति ही सुख-शांति हो।।3।।

ॐ ह्रीं कायिक पापोद्भवोपद्रवनिवारकाय श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उपहास[1] कर सब जब हमें फटकारते दुत्कारते।
गृह-ग्राम-राज-समाज से सर्वस्व छीन निकालते।। हे शांति...।।4।।

ॐ ह्रीं निजराजलक्ष्मीपुरराज्यगेहपदभ्रष्टोद्भवोपद्रवनिवारकाय श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दारिद्रता के दुःख बड़े प्रभु हम कहे किस जीभ से।
राजा सरीखे जीव भी तब पेट पालें भीख से।। हे शांति...।।5।।

ॐ ह्रीं दरिद्रोद्भवोपद्रव निवारकाय श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कलिकाल में प्रतिदिन नई फैले अनेक बीमारियाँ।
सह तीव्र दुस्सह वेदना धन भी गया तन भी गया।। हे शांति...।।6।।

ॐ ह्रीं भीमभगंदरगलितकुष्टगुल्मरक्तपित्तवातकफस्फोटकादि उपद्रवनिवारकाय श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भगवन ! जिसे हम चाहते, होता वही हमसे जुदा।
या हम जिसे ना चाहते वो ही मिले हमको सदा।। हे शांति...।।7।।

ॐ ह्रीं इष्टवियोगानिष्टसंयोगोद्भवोपद्रवनिवारकाय श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अपने पराये बन गये तब क्या परायों की कहे।
क्या माँ-पिता क्या बंधुजन वैरी सभी ही बन रहे।। हे शांति...।।8।।

ॐ ह्रीं स्वचक्रपरचक्रोद्भवोपद्रवनिवारकाय श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

---

1. मजाक उड़ाना।

56

बन्दूक असि[1] धनु[2] आदि से वैरी[3] करें प्रभु ! वार जब।
या फिर फटे परमाणु बम हो कष्ट हाहाकार तब॥
हे शांति प्रभु ! वरदान दो इन सब दुःखों की शांति हो।
परिवार विश्व समाज में सुख-शांति ही सुख-शांति हो॥9॥

ॐ ह्रीं विविधायुधोद्भवोपद्रवनिवारकाय श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मगरादि जलचर जब हमें मुख खोल खाने बढ़ रहे।
हँसकर किये थे पाप जो परिणाम हम रोकर सहे॥ हे शांति...॥10॥

ॐ ह्रीं जलचरजीवदुष्टोद्भवोपद्रवनिवारकाय श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जब जंगलों के जंगली गज व्याघ्र सिंहादिक मिले।
खाने हमें दौड़े तभी पैरों तले धरती हिले ॥ हे शांति...॥11॥

ॐ ह्रीं व्याघ्रसिंहगजादिवनपर्वतवासिश्वापदादि (श्वाष्टापदादि) उपद्रवनिवारकाय श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भूपर चले जो जंतुगण या जो उड़े आकाश में।
यदि दे हमें वे कष्ट तो हम सब गिरे दुःखपाश[4] में॥ हे शांति...॥12॥

ॐ ह्रीं भूचरगगनचरजीवदुष्टोद्भवोपद्रवनिवारकाय श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जब सर्प वृश्चिक आदि का या अन्य विष तन में चढ़े।
तब आग सी तन में लगे जीवन घटे संकट बढ़ें॥ हे शांति...॥13॥

ॐ ह्रीं व्यालवृश्चिकादिविषदुर्द्धरोपद्रवनिवारकाय श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन जंतु के हथियार सम नख सींग पैर व कर[5] घने।
वे कष्ट दें मानो हमें यमराज के घर भेजने ॥ हे शांति...॥14॥

ॐ ह्रीं दुष्टजीवपदकरनखोद्भवोपद्रवनिवारकाय श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

1. तलवार, 2. धनुष, 3. दुश्मन, 4. गड्ढा, 5. हाथ।

57

कुछ जंतु चोंच व दाढ़ से जब मारकर खावे हमें।
या फिर कंटीली काय से दे कष्ट तब दुःख हो हमें॥
हे शांति प्रभु ! वरदान दो इन सब दुःखों की शांति हो।
परिवार विश्व समाज में सुख-शांति ही सुख-शांति हो॥15॥

ॐ ह्रीं चंचुतुंडदाढकंटकोद्भवोपद्रवनिवारकाय श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वन ग्राम सागर आदि में बढ़ती हुई जब आग हो।
जन हानि हो धन हानि हो जलकर सभी कुछ खाक हो॥ हे शांति..॥16॥

ॐ ह्रीं दावानलोद्भवोपद्रवनिवारकाय श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(शंभु छंद)

जब पाप बढ़े धरती पर तब वायु भी राक्षस रूप धरे।
आँधी या तूफां बन हम पर वो महाप्रलय सी टूटे पड़े॥
हे शांति प्रभो ! हे शांति प्रभो ! इन सब कष्टों की शांति करो।
हम शांति विधान करें भगवन हम सबकी सर्व अशांति हरो॥17॥

ॐ ह्रीं प्रचण्डपवनोद्भवोपद्रवनिवारकाय श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सरवर सागर सरितादिक में जब नाव डूबती फँसती है।
इस सामूहिक पापोदय से जनता रो-रोकर मरती है॥ हे शांति...॥18॥

ॐ ह्रीं नौकास्फुटितपतनोद्भवोपद्रवनिवारकाय श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जंगल पर्वत या धरती में जब राह भटक जाते प्राणी।
तब चोर लुटेरों का भय हो या वार करें हिंसक प्राणी॥ हे शांति...॥19॥

ॐ ह्रीं वननगमेदिनीभयंकरोपद्रवनिवारकाय श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

58

तालाब नदी आदिक का जल जब हमें डुबा ले जाता है।
तब घोर उपद्रव के कारण मरणोपम[1] संकट आता है॥
हे शांति प्रभो ! हे शांति प्रभो ! इन सब कष्टों की शांति करो।
हम शांति विधान करें भगवन हम सबकी सर्व अशांति हरो॥20॥

ॐ ह्रीं नदीसरोवरअब्धिकूपह्रदोपद्रवनिवारकाय श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घनघोर बरसते पानी में जब वज्रपात बिजली कड़के।
तब सर्वनाश करने मानो इस धरती पर अंबर भड़के॥ हे शांति...॥21॥

ॐ ह्रीं विद्युत्पातादिभीमाम्बुवृष्टिउपद्रवनिवारकाय श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जोरू[2] जमीन जर[3] के कारण संग्राम सदा ही होते हैं।
तब मारकाट कर हे भगवन् ! अपने अपनों को खोते हैं॥ हे शांति...॥22॥

ॐ ह्रीं संग्रामस्थलारिनिकटोपद्रवनिवारकाय श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जब पूर्व भवों का शत्रु हमें व्यंतर पिशाच बनकर पेले।
या डाकिन शाकिन भूतजन्य अतिनिंद्य कष्ट हम सब झेलें॥ हे शांति...॥23॥

ॐ ह्रीं शाकिनीडाकिनीभूतप्रेतपिशाचादिभयनिवारकाय श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

खोटी विद्या का कर प्रयोग जब शत्रु शत्रुता पर उतरे।
मोहनस्तंभन उच्चाटन कर हमको दे खतरों पे खतरे॥ हे शांति...॥24॥

ॐ ह्रीं मोहनस्तंभनोच्चाटनप्रमुखदुष्टविद्योपद्रवनिवारकाय श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जब दुष्ट ग्रहों की परछाई हम पर अरिष्ट बनकर छाई।
ग्रह व्यथा गरीबी में मानो आटा गीला करने आई॥ हे शांति...॥25॥

ॐ ह्रीं दुष्टग्रहादिउपद्रवनिवारकाय श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

1. मरण के समान, 2. पत्नि, 3. धन।

59

जब राजदण्ड से दण्डित कर कारागृह में डाला जाता।
या मारपीट कर लोहे की जंजीरों से बाँधा जाता।।
हे शांति प्रभो ! हे शांति प्रभो ! इन सब कष्टों की शांति करो।
हम शांति विधान करें भगवन हम सबकी सर्व अशांति हरो।।26।।

ॐ ह्रीं श्रृंखलादिउपद्रवनिवारकाय श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यदि अल्प उम्र में ही भीषण जब मरणतुल्य संकट आवे।
या अकस्मात् दुर्घटना से अपमृत्यु पास आती जावे।। हे शांति...।।27।।

ॐ ह्रीं अल्पमृत्युउपद्रवनिवारकाय श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे प्रभु ! ये कैसी विडंबना या तो वर्षा ही ना आवे।
या आवे तो इतनी आवे की तेज बाढ़ सी आ जावे।। हे शांति...।।28।।

ॐ ह्रीं दुर्भिक्षोपद्रवनिवारकाय श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दिन-रात एक करके भी जब कुछ भी व्यापार नहीं होता।
कर्जे पर कर्जा चढ़ जाता तन हार गया मन भी रोता।। हे शांति...।।29।।

ॐ ह्रीं व्यापारवृद्धिरहितउपद्रवनिवारकाय श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जब अपने ही दुश्मन होकर व्यवहार परायों सा करते।
जो कष्ट शत्रु ना दे सकते वो कष्ट भाई बाँधव देते।। हे शांति...।।30।।

ॐ ह्रीं बंधुत्वोपद्रवनिवारकाय श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संतान प्राप्ति ना होती या संतान विवाहित ना होती।
कुलदीप बिना कुल की चिन्ता हर इक संसारी को होती।। हे शांति...।।31।।

ॐ ह्रीं अकुटुम्बोपद्रवनिवारकाय श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सीता जैसी सतियों का भी कर्मोदय से अपयश फैला।
इस नाम कर्म की लीला से प्रभु हमने भी अपयश झेला।। हे शांति...।।32।।

ॐ ह्रीं अपकीर्तिउपद्रवनिवारकाय श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

60

शेर छंद (तर्ज – हे दीनबन्धु श्रीपति..)

कल्याणकों से पूज्य शांतिनाथ आप हो।
कल्याण ही कल्याण हो जहाँ पे आप हो।।
कल्याणकारी पद जिनार्चना से प्राप्त हो।
फिर शांतिनाथ के समान शांति प्राप्त हो।।33।।

ॐ ह्रीं सम्पूर्णकल्याणमंगलप्रदाय श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु में अनंत दान रूप जादू की छड़ी।
चिंतामणी समान करें दान की झड़ी।।
सब चिंत्यवस्तु शांतिअर्चना से प्राप्त हो।
फिर शांतिनाथ के समान शांति प्राप्त हो।।34।।

ॐ ह्रीं चिंतामणिसमान चिंतितफलप्रदाय श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु कल्पवृक्ष के समान वस्तु दे रहे।
मानो समस्त कार्य सिद्धीरस्तु कह रहे।।
माँगे बिना हर वस्तु अर्चना से प्राप्त हो।
फिर शांतिनाथ के समान शांति प्राप्त हो।।35।।

ॐ ह्रीं कल्पवृक्षोपमकल्पितअर्थफलप्रदाय श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु कामधेनु के समान इच्छितार्थ दें।
जो कामना करो वही सभी पदार्थ दें।।
हर कामना का फल जिनार्चना से प्राप्त हो।
फिर शांतिनाथ के समान शांति प्राप्त हो।।36।।

ॐ ह्रीं कामधेनूपमकामनापूर्णफलप्रदाय श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु आपकी कृपा से परम धर्मध्यान हो।
फिर पुण्य से बाधा विमुक्त पूर्णज्ञान हो।।

प्रभु अर्चना से श्रेष्ठ ज्ञान ध्यान प्राप्त हो।
फिर शांतिनाथ के समान शांति प्राप्त हो॥37॥

ॐ ह्रीं परमोज्ज्वलधर्मध्यानबाधारहितअवद्यबोधप्रदाय श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु आपका महान कामदेव रूप है।
जिसको निहार तीन लोक मंत्र मुग्ध है॥
प्रभु अर्चना से कामदेव रूप प्राप्त हो।
फिर शांतिनाथ के समान शांति प्राप्त हो॥38॥

ॐ ह्रीं कामदेवस्वरूपप्रदाय श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जन्मातिशय से आपकी सुगंधकाय है।
जिसके सुगंध की कथा कही न जाय है॥
प्रभु अर्चना रचा सुगंधकाय प्राप्त हो।
फिर शांतिनाथ के समान शांति प्राप्त हो॥39॥

ॐ ह्रीं सुगंधशरीरप्रदाय श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आल्हादकार आपका मदन[1]-वदन[2] बना।
ये नामकर्म की विशेष पुण्य वर्गणा॥
आल्हादकार पद जिनार्चना से प्राप्त हो।
फिर शांतिनाथ के समान शांति प्राप्त हो॥40॥

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यनाथआल्हादकारकपदप्रदाय श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुणगान आपका अनंतकाल तक चले।
ऐसे परम सुगुण सभी को आपसे मिले॥
उज्ज्वल अनंतगुण शुभार्चना से प्राप्त हो।
फिर शांतिनाथ के समान शांति प्राप्त हो॥41॥

ॐ ह्रीं परमोज्ज्वलगुणगणसहितपदप्रदाय श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

---

1. कामदेव, 2. शरीर।

62

जिसके वचन व बुद्धि से कुपंथ सब नशे।
वाचस्पति समान श्रेष्ठ पद मिले उसे॥
वाचस्पति का पद महार्चना से प्राप्त हो।
फिर शांतिनाथ के समान शांति प्राप्त हो॥42॥

ॐ ह्रीं वाचस्पतिसमानपदप्रदाय श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे पाँचवे महान चक्रवर्ती आपका।
षट्खंड पे अखंड एकछत्र राज्य था॥
ये चक्रवर्ती पद सदार्चना से प्राप्त हो।
फिर शांतिनाथ के समान शांति प्राप्त हो॥43॥

ॐ ह्रीं चक्रवर्तिपदप्रदाय श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पत्नि हो पुत्रवंती सुंदरी सुहासिनी।
पति वा पिता के पक्ष की बने जो चाँदनी॥
जिनभक्ति से गृहलक्ष्मी व शिवलक्ष्मी प्राप्त हो।
फिर शांतिनाथ के समान शांति प्राप्त हो॥44॥

ॐ ह्रीं उभयकुलकमलविकासनसूर्यांशुसमाचरणप्रतिष्ठितगुणमंडित अत्यन्तसुन्दराकृति पुत्रवन्तिगेहमण्डनपदप्रदाय श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो एक देशरूप श्रावकों के व्रत धरें।
वो स्वर्ग सोलहों में श्रेष्ठ देवपद वरें॥
सागार[1] व्रत में बुद्धि अर्चना से प्राप्त हो।
फिर शांतिनाथ के समान शांति प्राप्त हो॥45॥

ॐ ह्रीं श्रावकसद्वृत्तकरणबुद्धिपदप्रदाय श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यशख्याति लाभ के ममत्व से हि यश घटे।
प्रभु के गुणानुवाद से ही श्रेष्ठ यश बढ़े॥

1. श्रावक।

63

त्रैलोक्यव्याप्त कीर्ति अर्चना से प्राप्त हो।
फिर शांतिनाथ के समान शांति प्राप्त हो॥46॥

ॐ ह्रीं परमोज्ज्वलकीर्तिपदप्रदाय श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धनलक्ष्मी में कारण महान् पुण्य योग है।
पर दान में लगे तभी शुभोपयोग है॥
प्रभु भक्ति से धन-धर्म-पुण्य लक्ष्मी प्राप्त हो।
फिर शांतिनाथ के समान शांति प्राप्त हो॥47॥

ॐ ह्रीं गर्वरहितपरमलक्ष्मीपदप्रदाय श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नर सुर गति में हेतु है कषाय मंदता।
पर दुर्गति में हेतु है कषाय तीव्रता॥
प्रभु अर्चना से कुगति नाश सुगति प्राप्त हो।
फिर शांतिनाथ के समान शांति प्राप्त हो॥48॥

ॐ ह्रीं नरकतिर्यंचगतिरहितनरसुरगतिसहितपदफलप्रदाय श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(अडिल्ल छंद)

सोलहकारण का शुभ चिंतन जो करें।
पाँच तीन या दो कल्याणक वो वरे॥
सोलहकारण चिंतन शांतिविधान से।
परम शांति हो शांतिनाथ के ध्यान से॥49॥

ॐ ह्रीं षोडशकारणभावनासाधनबलपदप्रदाय श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनियों को बालकवत् जो आहार दे।
जिनजननी[1] बनकर वो जन्म सुधार दे॥

1. तीर्थंकर की माता।

64

जिनजननी पद मिलता शांतिविधान से।
परम शांति हो शांतिनाथ के ध्यान से॥50॥

ॐ ह्रीं जिनजननीतुल्यएकजननीपदप्रदाय श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन पूजन से जिसका पुण्य विशाल हो।
उसी भव्य का मेरु पर प्रक्षाल हो॥
न्हवन मेरू पर होता शांतिविधान से।
परम शांति हो शांतिनाथ के ध्यान से॥51॥

ॐ ह्रीं मेरूशिखरेस्नानयुक्तपदप्रदाय श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थंकर बन जिनका तप कल्याण हो।
सिद्धसाक्षि में दीक्षित वे भगवान हो॥
स्वयंबुद्ध पद मिलता शांतिविधान से।
परम शांति हो शांतिनाथ के ध्यान से॥52॥

ॐ ह्रीं सिद्धसाक्षीदीक्षाकारीभवप्रदाय श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम संहनन वज्रवृषभनाराच है।
जिससे मिलता मोक्षपुरी का राज है॥
उत्तम संहनन मिलता शांतिविधान से।
परम शांति हो शांतिनाथ के ध्यान से॥53॥

ॐ ह्रीं वज्रवृषभनाराचसंहननमुक्तिप्रदाय श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यथाख्यात रत्नत्रय जिनके पास है।
करते वे कर्मों का सत्यानाश हैं॥
यथाख्यात संयम हो शांतिविधान से।
परम शांति हो शांतिनाथ के ध्यान से॥54॥

ॐ ह्रीं यथाख्यातरत्नत्रयाचरणयुक्तबलप्रदाय श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आत्म तत्त्व पर जिसका सत् श्रद्धान है।
उस सम्यक्त्वी को ही स्वातम ध्यान है॥
स्वात्मध्यान मिलता है शांतिविधान से।
परम शांति हो शांतिनाथ के ध्यान से॥55॥

ॐ ह्रीं स्वात्मध्यानामृतस्वादसहितभवप्रदाय श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वत्सल धर जो तीर्थंकर पद से सजें।
उनके कारण समवशरण धनपति रचे॥
समवशरण वैभव हो शांतिविधान से।
परम शांति हो शांतिनाथ के ध्यान से॥56॥

ॐ ह्रीं समवशरणविभूतिपदप्रदाय श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर के सर्वात्म प्रदेशों से खिरें।
जिनवाणी का रूप वही जिनवच धरें॥
केवलज्ञान मिले श्री शांतिविधान से।
परम शांति हो शांतिनाथ के ध्यान से॥57॥

ॐ ह्रीं सत्केवलज्ञानविभूतिपदप्रदाय श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नित्य निरंजन पद का जो आनंद है।
आठ कर्म विरहित वो परमानंद है॥
मिले निरंजन पद श्री शांतिविधान से।
परम शांति हो शांतिनाथ के ध्यान से॥58॥

ॐ ह्रीं निरंजनपदप्रदाय श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

66

प्रभु दर्शन से मनवा गद्‌गद् हो गया।
मानो प्रभु को पाकर प्रभु में खो गया॥
मन आनंदित होता शांतिविधान से।
परम शांति हो शांतिनाथ के ध्यान से॥59॥

ॐ ह्रीं मनोनंदकरणसमर्थाय श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन वचनों में जिनगुण भजन तरंग हो।
उनको पढ़कर सुनकर वचनानंद हो॥
वचनानंद मिले श्री शांतिविधान से।
परम शांति हो शांतिनाथ के ध्यान से॥60॥

ॐ ह्रीं वचनानंदकरणसमर्थाय श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अतिसुन्दर जिनदेव आपके दर्श से।
तन रोमांचित हो जाता है हर्ष से॥
कायानंद मिले श्री शांतिविधान से।
परम शांति हो शांतिनाथ के ध्यान से॥61॥

ॐ ह्रीं कायानंदकरणसमर्थाय श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रचुर[1] द्रव्य जिनपूजन में जिसका चढ़ा।
धनलक्ष्मी उन भक्तों पर बरसे सदा॥
मिले अर्थ[2] के साधन शांतिविधान से।
परम शांति हो शांतिनाथ के ध्यान से॥62॥

ॐ ह्रीं अर्थवर्गसिद्धिसाधनकरणसमर्थाय श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिस जिन पूजन से आतम सिद्धी मिले।
क्या अचरज फिर अगर काम सिद्धी मिले॥
काम सिद्धी मिलती है शांतिविधान से।
परम शांति हो शांतिनाथ के ध्यान से॥63॥

1. बहुत अधिक मात्रा, 2. धन।

67

ॐ ह्रीं कामवर्गसाधनकरणसमर्थाय श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्रव्य भावयुत जिन पूजन है मुक्तिदा।
पूजन से पूजक को मिलती पूज्यता।।
मिले मोक्ष के साधन शांतिविधान से।
परम शांति हो शांतिनाथ के ध्यान से।।64।।

ॐ ह्रीं मोक्षवर्गसाधनसिद्धकरणसमर्थाय श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ (गीता छंद)

श्री शांतिनाथ जिनेश का सुख-शांति देना काम है।
जिनके समय से आज तक जिन धर्म ध्वज अविराम है।।
श्री शांतिनाथ विधान से सारे दुःखों का अंत हो।
हे शांति प्रभु ! कर दो कृपा जिनधर्म ध्वज जयवंत हो।।

ॐ ह्रीं चतुःषष्ठिऋद्धिसमानांगाय श्री शांतिनाथाय जलादि पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ (नरेन्द्र छंद)

जब अशांति हो तब सुशांति हित हम सब शांति विधान करें।
शांति में भी आत्मशांति हित हम सब शांति विधान करें।।
सोलह दिन के पखवाड़े में शांति विधान महाफल दे।
सोलहवें तीर्थंकर जैसा सबको मोक्षमहाफल दे।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथाय शतैकविंशतिअंगाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छंद)

श्री शांतिप्रभु हिमवान[1] हैं, जो शांति गंग बहा रहे।
भज शांतिधारा से उन्हें, शुभ पुष्प हम बरसा रहे।।

1. हिमालय पर्वत।

68

श्री शांतिनाथ विधान से, सारे दुःखों का अंत हो।
हे शांति प्रभु ! कर दो कृपा, जिनधर्म ध्वज जयवंत हो॥

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

जाप्य मंत्र : ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथाय जगत्शान्तिकराय सर्वोपद्रवशांतिं कुरु-कुरु ह्रीं नमः स्वाहा। (जातिपुष्प या लवंग से 108 बार जाप करें।)

जयमाला

दोहा- शांतिनाथ के नाम पर, बिंदी गोल-मटोल।
जिन जयमाला हम पढ़ें, बजा बजाकर ढोल॥

(चामर छंद)

हे जिनेन्द्र ! तीर्थनाथ आपको प्रणाम हो।
हे जिनेन्द्र ! चक्रनाथ आपको प्रणाम हो॥
हे जिनेन्द्र ! कामदेव आपको प्रणाम हो।
हे जिनेन्द्र ! शांतिनाथ आपको प्रणाम हो॥1॥

हे अनंतज्ञानवान ! आपको प्रणाम हो।
हे अनंतसौख्यवान ! आपको प्रणाम हो॥
हे अनंतगुणनिधान ! आपको प्रणाम हो।
हे जिनेन्द्र ! शांतिनाथ आपको प्रणाम हो॥2॥

विश्व में महान् शांतिनाथ को प्रणाम हो।
विश्व में प्रधान शांतिनाथ को प्रणाम हो॥
विश्वसेनलाल शांतिनाथ को प्रणाम हो।
हे जिनेन्द्र ! शांतिनाथ आपको प्रणाम हो॥3॥

हस्तिनागपुर नरेश आपको प्रणाम हो।
हिन्ददेश[1] के महेश आपको प्रणाम हो॥

1. भारत।

69

आर्यम्लेच्छखंड ईश आपको प्रणाम हो।
हे जिनेन्द्र ! शांतिनाथ आपको प्रणाम हो॥4॥

पद्म आदि नौ निधि प्रधान को प्रणाम हो।
दण्ड आदि सर्व रत्नवान को प्रणाम हो॥
हे कुरुकुलाधिनाथ ! आपको प्रणाम हो।
हे जिनेन्द्र ! शांतिनाथ आपको प्रणाम हो॥5॥

गर्भजात तीन ज्ञानवान को प्रणाम हो।
जन्मजात श्रेष्ठ रूपवान को प्रणाम हो॥
सर्वपुण्य-प्रकृति-प्रधान को प्रणाम हो।
हे जिनेन्द्र ! शांतिनाथ आपको प्रणाम हो॥6॥

मुक्तिदानवान[1] मुक्तजीव को प्रणाम हो।
स्वात्मभावलीन शुद्ध जीव को प्रणाम हो॥
सिद्धलोक विद्यमान आपको प्रणाम हो।
हे जिनेन्द्र ! शांतिनाथ आपको प्रणाम हो॥7॥

कल्पनाअतीत नाथ आपको प्रणाम हो।
मार्गणाअतीत नाथ आपको प्रणाम हो॥
कर्मवर्गणाअतीत आपको प्रणाम हो।
हे जिनेन्द्र ! शांतिनाथ आपको प्रणाम हो॥8॥

भव्यजीवकर्णधार आपको प्रणाम हो।
तप्तहेमवर्णधार[2] आपको प्रणाम हो॥
द्वादशांग सूत्रधार आपको प्रणाम हो।
हे जिनेन्द्र ! शांतिनाथ आपको प्रणाम हो॥9॥

1. मोक्ष देनेवाले , 2. तपे सोने जैसा शरीर।

70

स्वेद-खेद-आधि-व्याधिमुक्त को प्रणाम हो।
श्रेष्ठ कुंदटोंक[1] से विमुक्त को प्रणाम हो॥
रागमुक्त त्यागयुक्त आपको प्रणाम हो।
हे जिनेन्द्र ! शांतिनाथ आपको प्रणाम हो॥10॥

विघ्न शांति हेतु शांतिनाथ को प्रणाम हो।
कष्ट शांति हेतु शांतिनाथ को प्रणाम हो॥
आत्मशांति हेतु शांतिनाथ को प्रणाम हो।
हे जिनेन्द्र ! शांतिनाथ आपको प्रणाम हो॥11॥

नौग्रहादि सर्वरिष्टहार को प्रणाम हो।
डाकिनादिजन्य कष्टहार को प्रणाम हो॥
रोगवेदना-क्षयार्थ आपको प्रणाम हो।
हे जिनेन्द्र ! शांतिनाथ आपको प्रणाम हो॥12॥

निर्धनार्थद्रव्यदानवान[2] को प्रणाम हो।
इच्छितार्थ सर्ववस्तुवान को प्रणाम हो॥
राज्यपुत्र-बुद्धिदानवान को प्रणाम हो।
हे जिनेन्द्र ! शांतिनाथ आपको प्रणाम हो॥13॥

आर्तरौद्र-शोषणार्थ आपको प्रणाम हो।
धर्म-शुक्लपोषणार्थ आपको प्रणाम हो॥
शुद्ध आत्मध्यान हेतु आपको प्रणाम हो।
हे जिनेन्द्र ! शांतिनाथ आपको प्रणाम हो॥14॥

साधुवेष प्राप्ति हेतु आपको प्रणाम हो।
श्रेष्ठ सत्समाधि हेतु आपको प्रणाम हो॥

1. कुंदप्रभ टोंक, 1. गरीबों को धन देने वाले।

71

अष्टकर्म नाश हेतु आपको प्रणाम हो।
हे जिनेन्द्र ! शांतिनाथ आपको प्रणाम हो॥15॥

पूज्यपाद पूज्य शांतिनाथ को प्रणाम हो।
मुक्ति 'राजश्री' सुनाथ आपको प्रणाम हो॥
'चन्द्रगुप्त' चित्तचंद्र नाथ को प्रणाम हो।
हे जिनेन्द्र ! शांतिनाथ आपको प्रणाम हो॥16॥

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथाय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– शांतिनाथ भगवान का पावन शांति विधान।
दुःख अशांति में भी हमें करता शांति प्रदान॥1॥
कल्पतरु प्रभु शांति से अरज शांति की आज।
'चंद्रगुप्त' त्रय गुप्ति से पावे शिवपुर 'राज'॥2॥

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

***

विधान प्रशस्ति

(नरेन्द्र छंद)

चंद्रनाथ प्रभु को वंदन कर, शांतिनाथ को करूँ नमन।
परमेष्ठि चौबीसों प्रभु वा, जिनवाणी को करूँ नमन॥
जिनने इनका रूप बताया, उन गणधर को है वंदन।
गणधर के प्रतिरूप दिगम्बर, जैनाचार्यों को वंदन॥1॥

उन आचार्यों की श्रेणी में, महावीरकीर्ति गुरुवर।
उनके नंदन कुंथुसिंधु गुरु, जो मेरे दादा गुरुवर॥
उनके नंदन गुप्तिनंदी गुरु, दीक्षा शिक्षा दी मुझको।
मात राजश्री और क्षमाश्री, शिक्षा दी जिनने मुझको॥2॥

72

मात राजश्री को संघाधिप, शांतिनाथ से प्रीत बड़ी।
शांतिनाथ के इस विधान की, रचना उनने शुरू करी॥
शुरू किया ही था लेखन की, उन्हें व्याधि ने घेर लिया।
साम्य समाधि सुधार मात ने, जग से मुखड़ा फेर लिया॥3॥

गुरु आज्ञा से इस विधान हित, मैंने अल्प प्रयास किया।
माताजी की कृति पूर्ण कर, अपना पुण्य विकास किया॥
गुप्ति गुरु के गण[1]–चैत्यालय, शांति जिनेश्वर जहाँ बसे।
उनके ही पदराग भक्तिवश, इस विधान के लेख रचे॥4॥

शुरू किया ग्यारह अप्रिल सन्, दो हजार तेरह था जब।
पूर्ण किया फिर बीस मई को, अगला महीना ही था तब॥
जब तक सूरज चाँद रहेगा, तब तक शांति विधान चले।
'चंद्रगुप्त' को शांतिनाथ सम, मुक्ति 'राजश्री' शीघ्र मिले॥5॥

दोहा– शांतिदास वर्णी लिखे, संस्कृत शांति विधान।
उसका ही आधार ले, हमने लिखा विधान॥1॥

गुप्तिनंदी गुरु से हुआ, संपादित ये काज।
कृति राजश्री मात की, पूर्ण करूँ मैं आज॥2॥

दिल्ली में आकर लिखा, पावन शांति विधान।
'चंद्रगुप्त' को शांति जिन, करो शांति का दान॥3॥

॥ इति प्रशस्ति॥

1. संघ।

73

प्रज्ञायोगी आचार्य श्री गुप्तिनंदी गुरुदेव की पूजन

रचनाकार : मुनि श्री चन्द्रगुप्तजी

(नरेन्द्र छन्द)

श्री गुप्तिनंदी गुरुवर जी, कविहृदय प्रज्ञायोगी।
हृदय कमल में आन विराजो, बन जाये हम भी योगी॥
मन मंदिर की तुम हो प्रतिमा, कैसे महिमा गायें हम।
सुरभित मनहर पुष्पांजलि से, आह्वानन कर ध्यायें हम॥1॥

ॐ ह्रीं आचार्य श्री गुप्तिनंदी गुरुदेव ! अत्र अवतर-अवतर सवौषट् आह्वाननम्, अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठ:-ठ: स्थापनम्, अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

क्षीरोदधि सम निर्मल गुरु से, निर्मलता हम सब पाये।
क्षीरोदधि का जल लेकर हम, चरण कमल धोने आये॥
प्रज्ञायोगी गुप्तिनंदी गुरु, त्रय गुप्ति के पालक हो।
सबके लालन-पालनकर्त्ता, श्रमण संघ संचालक हो॥

ॐ ह्रीं आचार्य श्री गुप्तिनंदी गुरुदेव चरणेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥1॥

गुरुवर तुमने मुनिपद धारा, भवसंताप मिटाने को।
तुम पद चंदन भक्त चढ़ायें, भव आताप नशाने को॥ प्रज्ञायोगी...

ॐ ह्रीं .... संसारताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा॥2॥

भौतिक पद के त्यागी गुरु की, महिमा हम गाने आये।
मुक्ता अक्षत अर्पण करके, अक्षयपद पाने आये ॥ प्रज्ञायोगी...

ॐ ह्रीं .... अक्षयपद प्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ॥3॥

कमल केतकी जूही चम्पा, पुष्प मनोहर लाये हम।
पद पंकज में सुमन चढ़ाकर, भक्तिनृत्य रचायें हम ॥ प्रज्ञायोगी...

ॐ ह्रीं ....कामबाण विनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ॥4॥

मधुर-मधुर वाणी है तेरी, जो हित का उपदेश करे।
षटरस व्यंजन से अर्चाकर, भक्त क्षुधा के क्लेश हरे ॥ प्रज्ञायोगी...

ॐ ह्रीं .... क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥5॥

74

केवल प्रज्ञा दीप जलाने, जगमग दीप सजायें हम।
ज्ञान दिवाकर के चरणों में, शुभ आरतियाँ गायें हम।
प्रज्ञायोगी गुप्तिनंदी गुरु, त्रय गुप्ति के पालक हो।
सबके लालन-पालनकर्त्ता, श्रमण संघ संचालक हो॥

ॐ ह्रीं .... मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ॥6॥

आठों कर्म नशाने गुरुवर, द्वादश तप को धरते हैं।
धूप घटों में धूप खिरा हम, पाप कर्म को हरते हैं ॥ प्रज्ञायोगी.....

ॐ ह्रीं .... अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा॥7॥

षट् ऋतुओं के फल लेकर हम, गुरुभक्ति करने आये।
मोक्ष महाफल की आशा ले, नतमस्तक होने आये॥ प्रज्ञायोगी.....

ॐ ह्रीं .... महामोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा॥8॥

जलगंधादिक अष्टद्रव्य ले, जय-जय घोष लगाते हैं।
पद अनर्घ्य की अभिलाषा से, हम सब अर्घ चढ़ाते हैं॥ प्रज्ञायोगी.....

ॐ ह्रीं .... अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥9॥

दोहा : शांतिदूत गुरु चरण में, करते शांतिधार।
चरण-पुष्प में हम करें, पुष्पांजलि मनहार॥

शांतये शांतिधारा...दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र : ॐ ह्रूं गुप्तिनंदी गुरवे नमः। (9, 27 या 108 बार जाप करें)

जयमाला

(सखी छंद)

गुणमाला गुरु की गायें, फूलों की माला लायें।
हम जय-जयकार लगायें, जयमाला गुरु की गायें॥

(तर्ज : माईन माईन...)

श्रद्धा के फूलों की माला, भक्त सभी ले आये।
श्री गुप्तिनंदी गुरुवर की, जयमाला हम गाये॥ गुरुवर हो ऽऽऽ.....

75

सावन वद साते को खुशियाँ, सावन बनकर बरसे।
जन्म हुआ भोपाल नगर में, कोमलचंद जी हर्षे॥
मात त्रिवेणी बाल शिशु को, निरख निरख हर्षायें।
श्री गुप्तिनंदी गुरुवर की, जयमाला हम गायें॥ श्री गुप्तिनंदी....

पड़गाहन राजेन्द्र करे, गुरुवर को घर ले आये।
भक्ति से आहार दिया पर, अंतराय आ जाये॥
बोला मैं उपवास करूँगा, गुरुवर तब समझाये। श्री गुप्तिनंदी....

घर वालों से आज्ञा माँगी, मुक्तिपथ की ठानी।
बोले जब तक ना जाने दो, लूँ ना भोजन पानी॥
करके अनशन तीन दिवस का, शरणा गुरु की पायें। श्री गुप्तिनंदी....

रोहतक नगरी में आ करके, कुंथुगुरु को ध्यायें।
वर्ष अठारह की लघुवय में, उनसे मुनिव्रत पायें॥
श्री आचार्य कनकनंदी को, शिक्षा गुरु बनायें। श्री गुप्तिनंदी....

गोम्मटेश के द्वारे गोम्मट, गिरी इन्दौर नगर में।
नर-नारी जयघोष करें, आचार्य पदारोहण में॥
श्रुतपंचमी को मुनिवर 'गुप्ति', जैनाचार्य कहायें। श्री गुप्तिनंदी....

हे गुरुवर ! तुम कविहृदय हो, मनहर काव्य बनाते।
कलम चला भौतिक मानव की, भौतिकता छुड़वाते॥
जो तेरे चरणों में आये, सच्चा भक्त कहाये। श्री गुप्तिनंदी....

हे भवसिंधु तारणहारी, मेरी नाव तिराना।
मुक्तिराजश्री पाने हेतु, संयम शक्ति दिलाना॥
'चन्द्रगुप्त' गुरु शरणा पाके, पूजन-भजन बनायें। श्री गुप्तिनंदी....

ॐ ह्रीं ...जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा : झाँझर-ढपली-ढोल ले, करते जय-जयनाद।
श्री गुप्तिनंदी गुरु, दे दो आशीर्वाद॥

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

76

अर्घावली

श्री शांतिनाथ भगवान (शंभु छंद)

तुम मोक्ष महाप्रद सुखकारी हो शांतिनाथ शांतिकारी।
आठों द्रव्यों को साथ चढ़ा बन जाये हम भी अविकारी॥
तीर्थंकर चक्री कामदेव हो तीन पदों के तुम धारी।
प्रभुवर की पूजा करने से मिट जाती भव की बीमारी॥

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री चौबीस तीर्थंकर (अडिल्ल छंद)

जल फल आदि अर्घ बनाऊँ भाव से।
पद अनर्घ हित भक्ति रचाऊँ चाव से॥
जिन शासन का चक्र प्रवर्त्तन कर रहे।
चौबीसों जिनवर भव संकट हर रहे॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिवीरपर्यंत चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री जिनवाणी माता (चामर छंद)

नीर गंध वस्त्र आदि अर्घ भाव से लिया।
आपका विधान मात भक्ति भाव से किया॥
दिव्य देशना महान है जिनेश आपकी।
मात अर्चना हरे प्रवंचना विभाव की॥

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भवसरस्वतीवाग्वादिन्यै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री गणाधिपति गणधर भगवान का अर्घ

कर्म अष्ट से लड़ने हेतु वेष दिगम्बर धार लिया।
क्षायिक पद की अभिलाषा से कर्म अरि पर वार किया॥
जल फल आदि आठ द्रव्य से करता प्रभु का अभिनंदन।
मुनिगण के स्वामी हैं गणधर उनका मैं करता अर्चन॥

ॐ ह्रीं श्री सर्वगणधर परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

77

श्री तीन कम नवकोटि मुनिराज (शंभु छंद)

जल, चंदन, अक्षत, दीप, धूप, नैवेद्य, हरित फल लाया हूँ।
अन्तर में भक्तिभाव लिये ऋषिराज शरण में आया हूँ॥
नवकोटि न्यून त्रय मुनियों को मैं वंदन बारम्बार करूँ।
बन जाऊँ मुनिमन सम निर्मल यह शुद्ध भावना हृदय धरूँ॥

ॐ ह्रीं श्री अढ़ाई द्वीपस्थ न्यून त्रय नवकोटि श्रमणेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ग. गणधराचार्य श्री कुन्थुसागरजी (शेर छंद)

आचार्य कुंथु सिंधु है वात्सल्य दिवाकर।
हम धन्य धन्य आज उनको अर्घ चढ़ाकर॥
जिनधर्म का डंका बजाना जिनका है धरम।
भक्ति से भक्त बोलो वंदे कुंथुसागरम्॥

ॐ ह्रीं गणाधिपति गणधराचार्य श्री कुन्थुसागरजी गुरुदेव चरणेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वैज्ञानिक धर्माचार्य श्री कनकनंदीजी (शंभु छंद)

ये अष्ट द्रव्य का थाल सजा नित पूजन करने आता हूँ।
मैं देख तुम्हारी मूरत को तव पद को ही ललचाता हूँ॥
गुरुवर की पूजा करने से मन की आकुलता मिटती है।
भव-भव के बंध कटे सारे, दुर्बुद्धि उसकी हटती है॥

ॐ ह्रीं वैज्ञानिक धर्माचार्य श्री कनकनंदीजी गुरुदेव चरणेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रज्ञायोगी आचार्य श्री गुप्तिनंदीजी

(तर्ज-मेरे सर पे...)

हे प्रज्ञायोगी गुरुवर दो प्रज्ञा का वरदान।
गुरुवर गुप्तिनंदी को बारम्बार प्रणाम-2
अष्ट द्रव्य से सजी धजी ये सुन्दर थाल निराली है।
गुरुवर तुमको अर्घ चढ़ाकर मिल जाती खुशहाली है॥
हे कुंथु गुरु के नंदन, हे धर्मतीर्थ की शान।
गुरुवर गुप्तिनंदी को बारम्बार प्रणाम-2

ॐ ह्रीं प्रज्ञायोगी आचार्य श्री गुप्तिनंदी गुरुदेव चरणेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

***

समुच्चय अर्घ

(तर्ज- नसे घातियाँ...)

परमेष्ठियों को सदा मैं ध्याऊँ, माँ शारदे को शीश नवाऊँ।
अनेकांत मय ये धर्म है प्यारा, सब पापों से हो छुटकारा॥1॥

पंचसुमेरु के अस्सी जिनालय, भव्यों के सुख के हैं आलय।
बावन जिन चैत्यालय प्यारे, नंदीश्वर हैं सब मनहारे॥2॥

तीनलोक के कृत्रिमाकृत्रिम, चैत्यालय में हैं जिनबिम्ब।
उनको नित प्रति अर्घ चढ़ाऊँ, भाव वंदना से सुख पाऊँ॥3॥

सम्मेदगढ़ गिरनार गिरी को, चम्पापुरी और पावापुरी को।
सोनागिर मथुरा चौरासी, बाहुबली गोम्मटगिरी वासी॥4॥

आदि सभी तीरथ को ध्याऊँ, उनको नितप्रति अर्घ चढ़ाऊँ।
सीमंधर आदि जिन स्वामी, पूजा करूँ मैं हे जगनामी॥5॥

दोहा : अष्टद्रव्य का थाल ले, अर्घ चढ़ाऊँ आज।
इहभव-परभव सफल हो, सिद्ध होय सब काज॥

ॐ ह्रीं द्रव्य सहित भावपूजा भाववंदना त्रिकाल पूजा त्रिकाल वंदना करे करावै भावना भावै श्री अरहंतसिद्ध आचार्य उपाध्यायसर्वसाधु पंच परमेष्ठिभ्यो नमः। प्रथमानुयोग करणानुयोग चरणानुयोग द्रव्यानुयोगेभ्यो नमः। उत्तमक्षमादि दशलाक्षणिकधर्मेभ्यो नमः। दर्शनविशुद्धयादि षोडशकारणेभ्यो नमः। सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्रेभ्यो नमः। विदेह क्षेत्रस्थ विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः। जल, थल, आकाश, गुफा, पहाड़, सरोवर, नगर-नगरी, ऊर्ध्वलोक, मध्यलोक, अधोलोक स्थित कृत्रिम-अकृत्रिम जिनचैत्यालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो नमः। पाँच भरत पाँच ऐरावत संबंधी तीस चौबीसी के सात सौ बीस

79

जिनराजेभ्यो नमः। नंदीश्वर द्वीप संबंधी बावन जिनचैत्यालयेभ्यो नमः। पंचमेरू संबंधी अस्सी जिनचैत्यालयेभ्यो नमः। सम्मेदशिखर, कैलाशगिरी, चंपापुर, पावापुर, गिरनार, सोनागिर, मथुरा, गजपंथा, मांगीतुंगी, तपोभूमि आदि सिद्धक्षेत्रेभ्यो नमः। जैनबद्री, मूढ़बद्री, देवगढ़, चंदेरी, पपौरा, हस्तिनापुर, अयोध्या, कुंथुगिरी, पुष्पगिरी, अंजनगिरी, नवग्रह धर्मतीर्थ वरूर,राजगृही, तारंगा, चमत्कार, महावीरजी, पदमपुरा, तिजारा, अहिच्क्षेत्र, कचनेर, जटवाड़ा, पैठण, गोम्मटेश्वर, चंवलेश्वर, बिजौलिया, चांदखेड़ी, पाटन, कुण्डलपुर, अणिन्दा वृषभदेव आदि अतिशय क्षेत्रेभ्यो नमः। श्री चारण ऋद्धिधारी सप्त परमर्षिभ्यो नमः। भूत–भविष्यत–वर्तमान काल संबंधी चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः।

ॐ ह्रीं श्रीमंतं भगवंतं कृपावंतं श्री वृषभादि महावीरपर्यंतं चतुर्विंशति तीर्थंकर परमदेवं आद्यानां आद्ये जम्बूद्वीपे भरत क्षेत्रे आर्यखण्डे भारत देशे..... प्रान्ते–नगरे..... मासानांमासे.....मासे..... पक्षे..... तिथौ..... वासरे मुनि आर्यिकाणां श्रावक श्राविकाणां, क्षुल्लक, क्षुल्लिकानां, सकल कर्मक्षयार्थं (जलधारा) जलादि महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(27 श्वासोच्छवास में 9 बार णमोकार मंत्र पढ़ें।)

***

80

शांतिपाठ (हिन्दी)

चौपाई

(शांतिपाठ बोलते समय पुष्पांजलि क्षेपण करते रहें)

शांतिनाथ हैं जगहितकारी, शान्ति प्रदाता मंगलकारी।
सौम्य शांत प्रतिमा जो लखता, भवसागर से वह नर तिरता॥1॥

शरण तुम्हारी जो भी आता, मंगलमय शिवपद पा जाता।
पूजा प्रतिदिन भाव से करता, वह नर कभी न दुःख में पड़ता॥2॥

(यह श्लोक बोलते समय शांतिधारा करें)

शांतिधारा तुम्हें चढ़ाऊँ, प्रभु सम शांति मैं पा जाऊँ।
जग जीवों को शांति कर दो, धर्म सुधारस सब में भर दो॥3॥

दुःखी दरिद्री रहे न कोई, सबकी मति धर्ममय होई।
देव गुरु की शरणा पायें, भव दुःखों से न घबरायें॥4॥

राजा-प्रजा सभी नर-नारी, भक्ति करते सभी तुम्हारी।
भक्त से वे भगवान हैं बनते, मुक्ति रमा पा सुख में रमते॥5॥

विसर्जन पाठ

(दोहा)

प्रमादवश मैंने प्रभो! की पूजा में चूक।
अज्ञानी हूँ नाथ मैं क्षमा करो शिव भूप॥1॥

भक्ति भाव में मन लगा पाऊँ तुम सम रूप।
चरण शरण पा आपकी काटूँ कर्म अनूप॥2॥

तीन काल त्रैलोक्य में कोई न सच्चा देव।
जगत भ्रमण अब तक किया पूजें देव-कुदेव॥3॥

सत्य लगन हुई आपसे मिट गई मन की प्यास।
सम्यग्दर्शन निधि मिले छूटे भव की त्रास॥4॥

81

श्री जिन पूजन यज्ञ में आये जो-जो देव।
धर्मप्रेम रख जिन भुवन, आयें नित्य सदैव॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं अस्मिन् नित्य पूजाभिषेक विधाने आगच्छत सर्वे देवाः स्वस्थाने गच्छतः-3जः-3स्वाहा। इत्याशीर्वादः

(यह दोहा बोलते हुए आशिका ग्रहण करें)

दोहा : भगवंतों की आशिका, धारण करता शीश।
भव बंधन मेरे कटें, शरण पाऊँ जगदीश॥

श्री शान्तिनाथ भगवान की आरती

रचनाकार : मुनि श्री चन्द्रगुप्तजी

(तर्ज : आया बाबा का त्यौहार, शिवरात्रि...)

सूरज-चाँद-सितारे जैसे, चमचम दीप जलाओ।
चम-चम दीप जलाओ भक्तों, छम-छम नृत्य रचाओ॥
आओ आओ रे आरतियाँ गाओ।
शांतिनाथजी की आरतियाँ गाओ॥

शांतिप्रभु की सुन्दर सलौनी, लागे मूरत प्यारी।
नैनों से उनके नैना मिलाके, जाऊँ मैं बलिहारी॥
घुँघरू की छम-छम के संग-संग, ढम-ढम ढोल बजाओ।
स्वर्णथाल में दीपमाल को, जय-जय बोल सजाओ॥
आओ आओ रे....

शांतिप्रभु से शांति मिले जो, और कहाँ मिल पाती।
दीपार्चना में जनता प्रभु की, जय-जयकार लगाती॥
लाख-लाख दीपों से प्रभु की, महाआरती गाओ।
शांतिनाथ मंदिर में भक्तों, दीपावली मनाओ॥
आओ आओ रे....

82

भक्तों के भगवन् शांति जिनेश्वर, जग के पालनहारे।
'चन्द्रगुप्त' की अँखियों के भगवन्, तुम हो चाँद सितारे॥
एक हाथ में वीणा लेकर, झन-झन तार बजाओ।
दूजे हाथ में खंजरिया ले, छम-छम नाचत गाओ॥
आओ आओ रे....

श्री शान्तिनाथ भगवान की आरती

रचियित्री : ग.आ. राजश्री माताजी

(तर्ज : ना कजरे की धार...)

हम आए तेरे द्वार, हे शान्तिनाथ भगवान।
करें वंदन बारम्बार प्रभु की, आरती करते आज,
प्रभु की आरती करते आज। होऽऽ

हो विश्वसेन के प्यारे, ऐरा के राजदुलारे।
हस्तिनापुर में जन्मे, सब जन के तुम मनहारे।
नाचें-गाएँ धूम मचाएँ-2 देवों ने किया जयकार॥
हम आए....

दुनियाँ की देख दशा को, वैराग्य हृदय में धारा।
संयमपथ पर चलने को, त्यागा धन-वैभव सारा।
प्रभु की वाणी मोक्ष दानी-2 तेरी महिमा अगम अपार॥
हम आए....

तुम तीर्थंकर पद धारी, हो कामदेव जयकारी।
प्रभु चक्रवर्ती पद धारी, छह खण्डों के अधिकारी।
'राज' आए भक्ति गाए-2, तुम सुख के हो भण्डार॥
हम आए....

83

श्री शांतिनाथ विधान की आरती

रचियित्री : आर्यिका आस्थाश्री माताजी

(तर्ज–माईन माईन....)

शांति विधान रचाकर हम सब, जगमग दीप जलायें।
शांतिनाथ की आरती करके, सुख–शांति पा जायें॥
बोलो शांतिनाथ की जय...2

नगर हस्तिनापुर के राजा, तीन पदों के धारी।
मोक्ष गये सम्मेदशिखर से, वरली शिवपुर नारी॥
धर्मसूर्य ऐसा चमकाया–2, अविरल चलता आये।
शांतिनाथ की आरती..

दुःख संकट में तुमको स्वामी, भक्त सदा ही ध्यायें।
भव–भव की सारी विपदायें, क्षण भर में मिट जायें॥
शांतिनाथ है नाम तुम्हारा–2, सबको शांति दिलाये।
शांतिनाथ की आरती..

भक्ति की झंकार बजे यो, जैसे घुँघरु बाजे।
छम–छम नृत्य रचायें भविजन, ढोल ढमाढम बाजे॥
केवल ज्योति जगाने भगवन्–2, 'आस्था' शीश झुकाये।
शांतिनाथ की आरती..

***

84

श्री शांतिनाथ स्तोत्र

रचनाकार : मुनि श्री चन्द्रगुप्तजी

मत्तगयंद छंद

(तर्ज : वीर हिमाचल से निकसि...)

शांति जिनेन्द्र शतेन्द्र सुपूजित मेरुगिरी अभिषेक हुआ रे।
शांति प्रभो यह नाम रखे सुर इन्द्र वहाँ करके जयकारे॥
कंकण कुंडल आदिक ले जिनबालक को शचि भव्य संवारे।
शांति प्रभो जय शांति प्रभो ग्रह शांति करें बुध दोष निवारे॥1॥

ऋद्धि धनी मुनि को प्रभुजी भव ग्यारह पूर्व अहार कराये।
जन्म लिया कुरु उत्तर में फिर स्वर्गपुरी पहली प्रभु पाये॥
खेचर हो मुनि हो मरणांत सुधार सुआनत स्वर्ग सिधारे।
शांति प्रभो जय शांति प्रभो ग्रह शांति करें बुध दोष निवारे॥2॥

स्वर्ग तजा बलभद्र बने अपराजित ये शुभ नाम कहाये।
संस्तर तीस दिनों तक ले मुनि हो प्रभु अच्युत इन्द्र कहाये॥
नाथ बने फिर तीर्थपतिसुत पावन चक्रपति पद धारे।
शांति प्रभो जय शांति प्रभो ग्रह शांति करें बुध दोष निवारे॥3॥

दीक्षित हो पितु से प्रभु ने भवचक्र हरा वृष चक्र संवारे।
धार समाधि सुग्रीवक में अहमिन्द्र बने बहु आयुष धारे॥
राजन मेघरथो बनते जिनधर्मरथी यह सारथ प्यारे।
शांति प्रभो जय शांति प्रभो ग्रह शांति करें बुध दोष निवारे॥4॥

85

राजन से मुनिराज बने फिर सोलहकारण भाव विचारे।
कल्प नहीं जहँ कल्पित हैं उस श्रेष्ठ अनुत्तर में भव धारे॥
अंतिम स्वर्ग तजे तब देव भजे प्रभु अंतिम गर्भ पधारे।
शांति प्रभो जय शांति प्रभो ग्रह शांति करें बुध दोष निवारे॥5॥

श्री गज बैल मृगेन्द्र रमा द्वय माल दिवाकर चंद्र निराला।
मीन घड़ा ह्रद सिंधु सिंहासन देव विमान फणीन्द्र निवासा॥
रत्नसुराशि व निर्धूम अग्नि यही सपने जिनमात निहारे।
शांति प्रभो जय शांति प्रभो ग्रह शांति करें बुध दोष निवारे॥6॥

हस्तिनश्रीपुर में जनमे तब हस्ति सजा हँसते मुस्काते।
नाचे छमाछम चाले सनासन गद्गद् हो मद छोड़ चिंघाड़े॥
भव्य महाअभिषेक हुआ उसकी किस आनन कीर्ति उचारे।
शांति प्रभो जय शांति प्रभो ग्रह शांति करें बुध दोष निवारे॥7॥

शांति पुराण महा प्रभु का जिसमें इक सुंदर बात कही है।
शासन से प्रभु के अब भी जिनधर्म नदी अविराम बही है॥
शांतिप्रदायक शांतिविधायक कल्पतरू प्रभु शांति हमारे।
शांति प्रभो जय शांति प्रभो ग्रह शांति करें बुध दोष निवारे॥8॥

***

86

श्री शांत्यष्टक स्तोत्र

रचियेत्री : गणिनी आर्यिका राजश्री माताजी

शिखरिणी छन्द (तर्ज : महावीर स्वामी नयनपथगामी...)

प्रभु श्री शांति को हरक्षण भजेंगें हम सभी।
हमें शक्ति देना तुम सम बनेंगें हम कभी॥
हरें आधी-व्याधी त्रय पद प्रभु के नमन से।
बने जेता-त्रेता प्रभु गुण निधि के भजन से॥1॥

करूँ सेवा पूजा सरल सुखकारी चरण में।
भरो खाली झोली परम निधि पायें शरण में॥ हरें आधी... ॥2॥

पिता-माता प्यारे जन-मन दुलारे जगत में।
बसा लूँगा मैं भी सुखनिधि प्रभु को हृदय में॥ हरें आधी... ॥3॥

महावैरी पापी वसु विधि प्रभु ने तज दिये।
प्रभु गाथा गायें तन-मन जिन्होंने वश किये॥ हरें आधी... ॥4॥

विजेता श्री शांति अमर अविनाशी बन गये।
दयासिन्धु स्वामी सुमर भवि प्राणी तर गये॥ हरें आधी... ॥5॥

विचारों की गंगा भ्रमण करवाती भुवन में।
दु:खों की धारा से प्रभुवर निकाले शरण ले॥ हरें आधी... ॥6॥

भजो शांति-शांति तन-मन सभी को वश करो।
हरो सारी माया भव-भव दु:खों को कृश करो॥ हरें आधी... ॥7॥

सुनें गायें गाथा जिनवर गुणों के चयन की।
जगी आशा मेरी लगन शिवगामी गमन की॥ हरें आधी... ॥8॥

दोहा- शांत्यष्टक इस पाठ में, 'राज' लगाये भाव।
गुरु संघ वंदन करे, जगे निजात्म स्वभाव॥

***

87

श्री शांतिनाथ चालीसा

रचियित्री : गणिनी आर्यिका राजश्री माताजी

दोहा- पंच परम परमेष्ठि का, नाम हरे संताप।
शीश नवाऊँ भाव से, जपूँ प्रभु का जाप॥
शांतिनाथ भगवान का, चालीसा सुखकार।
बुध ग्रह की बाधा हरे, प्रभु जीवन आधार॥

(चौपाई)

जय श्री शांतिप्रभु सुखकारी, जन जन के दु:ख संकटहारी।
शांति प्रभु शांति के दाता, प्रभु चरणों में मैं भी आता॥1॥

विश्वसेन हैं पिता तुम्हारे, ऐरा माँ के राजदुलारे।
हस्तिनागपुर जन्म लिया है, सबके मन को हर्ष दिया है॥ 2॥

शांति प्रभु जब गर्भ में आये, तीन लोक में शांति छाये।
अष्ट कुमारी देवी आये, माँ की सेवा में लग जाये॥ 3॥

वे माता का मन बहलाती, नाना भेंट सजाकर लाती।
जन्मोत्सव की महिमा न्यारी, बाल छवि सबको मनहारी॥ 4॥

इन्द्र हजारों नयन बनाये, शचि भी सम्यग्दर्शन पाये।
मेरूगिरी पर न्हवन कराया, सुर ऋषिगण ने पुण्य कमाया॥ 5 ॥

सुरपति ताण्डव नृत्य रचाये, झूमे गाये खुशी मनाये।
कामदेव पदवी के धारी, मनमोहक छवि सबसे न्यारी॥ 6॥

षट्खण्डों पर राज्य किया था, चक्री पद को प्राप्त किया था।
फिर भी राजपाट को छोड़ा, महाव्रतों से नाता जोड़ा॥ 7॥

चार घातिया कर्म नशाये, केवलज्ञान सूर्य प्रगटाये।
द्वादश धर्म सभा मनहारी, शोभे प्रभु जन मंगलकारी॥ 8॥

88

गुण होते जब अपयश फैले, मन अशांत हो चहुँदिश डोले।
तब शांति प्रभु शरणा आओ, गुण कीर्त्तन से यश पा जाओ॥ 9॥

अग्नि ज्वाला धधक रही हो, तेज हवा से भड़क रही हो।
इधर उधर सब प्राणी दौड़े, तब प्रभुवर का नाम न छोड़े॥ 10॥

वाणी में कटुता आ जावे, तेज बाण सी वो चुभ जावे।
झगड़ा द्वेष सभी मचवाये, प्रभु का नाम मधुरता लाये॥ 11॥

मात-पिता भी साथ न देते, सुख वैभव शांति ले लेते।
मन की पीड़ा मन ही जाने, तब प्रभुवर की शरणा माने॥12॥

श्रम करते भी धन ना आवे, चंचल चित् में चिंता आवे।
चंचल चित् भी चिता समाना, तब प्रभुवर की शरणा आना॥13॥

दांतों के कई रोग सतावे, भूख प्यास की बाधा आवे।
मन ही मन प्रभुवर गुण गाओ, दंत रोग को दूर भगाओ॥14॥

बुध ग्रह की बाधा जब आवे, नाना विध के कष्ट दिलावे।
जो प्रभु का चालीसा गावे, ग्रह अनुकूल सभी हो जावे॥15॥

सुख सम्पत गुण यश के दानी, नवनिधी चौदह रत्न प्रदानी।
दीन दरिद्री धन पा जाये, पुत्रहीन सुखकर सुत पाये॥16॥

अल्पबुद्धि ज्ञानी बन जाये, रोगी रोग नशे सुख पाये।
सर्वक्लेश अघ संकट हर्त्ता, शांतिनाथ सब सुख के भर्त्ता॥17॥

शांतिनाथ जिन अतिशयकारी, सर्वक्षेत्र में अतिशय भारी।
तीर्थ नगर व ग्राम अनेकों, शांतिनाथ का अतिशय देखो॥18॥

झांझर ढोल मंजीरा लाऊँ, घंटा ताल मृदंग बजाऊँ।
दीप धूप की थाल सजाऊँ, चालीसा जिनवर का गाऊँ ॥19॥

89

मेरा कष्ट हरो प्रभु स्वामी, बन जाऊँ मैं शिवपुर गामी।
नित चालीसा हम सब गायें, 'राज' प्रभु को शीश झुकाये॥20॥

दोहा– चालीसा जिन शांति का, चालीस दिन कर पाठ।
करो कराओ भक्ति से, दीप धूप के साथ॥
सर्व रोग दु:ख दूर हो, और पाप का नाश।
बढ़े भाग्य सुख सम्पदा, बने धर्ममय श्वास॥

जाप्य मंत्र :– ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नम:।

***

श्री शांतिनाथ व्रत (शांति भक्ति व्रत)

व्रत विधि–श्री शांतिनाथ भगवान सोलहवें तीर्थंकर हैं, साथ ही पाँचवें चक्रवर्ती एवं बारहवें कामदेव भी हुए हैं। इस प्रकार ये भगवान तीन महान पद के धारक हुए हैं। श्री पूज्यपाद स्वामी द्वारा रचित शांतिभक्ति साधुगण एवं श्रावकगण सभी में प्रसिद्ध है। उस शांतिभक्ति का ही यह व्रत है। इसमें सोलह काव्य हैं वे सभी एक से बढ़कर एक महिमापूर्ण हैं। उन एक–एक काव्य का आश्रय कर यह व्रत करना चाहिए। इस व्रत के प्रसाद से स्वयं को शांति, सर्व व्याधियों का विनाश एवं सर्व कष्ट, संकट, आपदाओं का निवारण होगा। सर्वत्र मंगल होगा, घर में, परिवार में मंगल, क्षेम होगा, देश में सुभिक्ष होगा, राजा–प्रजा में धार्मिक भावनाएँ बनेंगी व बढ़ेंगी अतः यह व्रत बहुत ही महत्त्वपूर्ण है।

श्री पूज्यपाद स्वामी जो कि हजार वर्ष पूर्व हुए हैं, एक समय उनकी नेत्र की ज्योति मंद हो गई, उसी क्षण उन्होंने शांतिनाथ चैत्यालय में बैठकर इस शांतिनाथ की भक्ति की रचना की, आठवें काव्य को पढ़ते ही 'दृष्टिं प्रसन्नां कुरु' बोलते ही उनकी आँख की रोशनी वापस आ गई। इस वाक्य

90

में श्लेषालंकार है कि हे भगवन् ! आप मुझ पर अपनी दृष्टि प्रसन्न करो अथवा मुझ पर प्रसन्न होवो अर्थात् मेरी दृष्टि–नेत्र ज्योति, प्रसन्न–स्वच्छ–स्वस्थ–निर्मल करो। ऐसे दो अर्थ होते हैं।

व्रत विधि–इस व्रत को शुक्ला अष्टमी से प्रारंभकर लगातार प्रत्येक मास की दो–दो अष्टमी ऐसे 16 अष्टमी तक यह व्रत करना चाहिए। अथवा खुली तिथि में कभी भी कर सकते हैं। व्रत की उत्तम विधि उपवास, मध्यम अल्पाहार और जघन्य में एक बार शुद्ध भोजन करना एवं व्रत के दिन शांतिभक्ति का 16 बार या कम से कम एक बार पाठ करना है।

व्रत पूर्ण कर उद्यापन में शांतिविधान करना, भगवान शांतिनाथ की प्रतिमा प्रतिष्ठित कराना, शांति भक्ति का 16 दिन अखंड पाठ करना आदि, अपनी शक्ति के अनुसार 16–16 उपकरण मंदिर में भेंट करना आदि है। व्रत पूर्ण कर भगवान की चार कल्याणक भूमि हस्तिनापुर एवं निर्वाणभूमि सम्मेदशिखर की वंदना करना चाहिए।

व्रतों के मंत्र निम्न प्रकार हैं :–

समुच्चय मंत्र :–

ॐ ह्रीं जगदापद्विनाशनाय सर्वशांतिकराय श्रीशांतिनाथाय नमः।

प्रत्येक 16 मंत्र :–

1. ॐ ह्रीं संसारदुःखभीतभव्यगणशरण्याय श्रीशांतिनाथाय नमः।
2. ॐ ह्रीं सर्वविघ्नशांतिकराय श्रीशांतिनाथाय नमः।
3. ॐ ह्रीं प्रणतजनकष्टनिवारकाय श्रीशांतिनाथाय नमः।
4. ॐ ह्रीं स्तोतव्णां मृत्युंजयपदप्रदायकाय श्रीशांतिनाथाय नमः।
5. ॐ ह्रीं चरणाम्बुजस्तुतिकर्तृणां सर्वरोगविनाशकाय श्रीशांतिनाथाय नमः।

91

6. ॐ ह्रीं स्तवनप्रसादात् स्तोतय्णां अचिन्त्यसारसौख्यप्रदायकाय श्रीशांतिनाथाय नमः।
7. ॐ ह्रीं चरणकमलाश्रितजनसर्वपापप्रणाशकाय श्रीशांतिनाथाय नमः।
8. ॐ ह्रीं स्वपादपद्माश्रयिशान्त्यर्थिभाक्तिकानां दृष्टिप्रसन्नविधायकाय श्रीशांतिनाथाय नमः।
9. ॐ ह्रीं शीलगुणव्रतसंयमपात्राय श्रीशांतिनाथाय नमः।
10. ॐ ह्रीं पंचमचक्रिषोडशतीर्थंकराय श्रीशांतिनाथाय नमः।
11. ॐ ह्रीं अशोकवृक्षाद्यष्टप्रातिहार्यसमन्विताय श्रीशांतिनाथाय नमः।
12. ॐ ह्रीं सर्वगणाय स्तुतिपाठकाय मह्यं च परमशांतिकराय श्रीशांतिनाथाय नमः।
13. ॐ ह्रीं शक्रादिभिः स्तुतपादपद्माय सततशान्तिकराय श्रीशांतिनाथाय नमः।
14. ॐ ह्रीं संपूजक–प्रतिपालक–यतीन्द्रगण–देश–राष्ट्र–पुर–नृपतिगण–शांतिकराय श्रीशांतिनाथाय नमः।
15. ॐ ह्रीं क्षेम–धार्मिकनृपति–समयसमयवृष्टिकारकाय व्याधिदुर्भिक्ष–चौरिमारिकष्टनिवारकाय सर्वसौख्यकरधर्मचक्र प्रवर्तकाय श्रीशांतिनाथाय नमः।
16. ॐ ह्रीं केवलज्ञानभास्कर–जगत् शांतिकारकवृषभादि तीर्थंकर–समन्विताय श्रीशांतिनाथाय नमः।

साभार–जैन व्रत विधि संग्रह
(गणिनी प्रमुख ज्ञानमती माताजी)

92

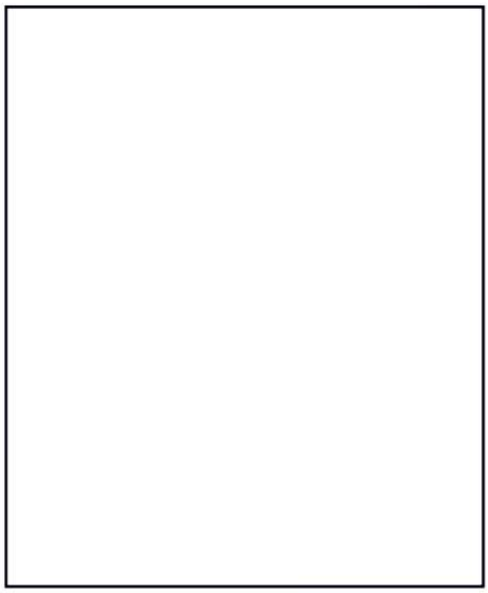

प्रज्ञायोगी आचार्य श्री गुप्तिनन्दीजी गुरुदेव का परिचय

जन्म दिनांक	–	1 अगस्त, 1972
जन्म स्थान	–	भोपाल (म.प्र.)
माता	–	श्रीमती त्रिवेणी बाई जैन
		(वर्तमान में क्षु. धन्यश्री माताजी)
पिता	–	श्री कोमलचंदजी जैन
जाति	–	परवार दिगम्बर जैन
आजीवन ब्रह्मचर्य	–	विद्याभूषण आचार्य सन्मतिसागरजी से (सन् 1990)
मुनि दीक्षा	–	22 जुलाई, 1991–रोहतक (हरियाणा)
दीक्षा गुरु	–	ग. ग. श्री कुंथुसागरजी गुरुदेव
शिक्षा गुरु	–	वैज्ञानिक धर्माचार्य श्री कनकनन्दीजी गुरुदेव
आचार्य पदारोहण	–	27 मई, 2001, श्रुतपंचमी
		गोम्मटगिरी (इन्दौर)
आचार्य पद प्रदाता	–	ग. ग. श्री कुंथुसागरजी गुरुदेव

93

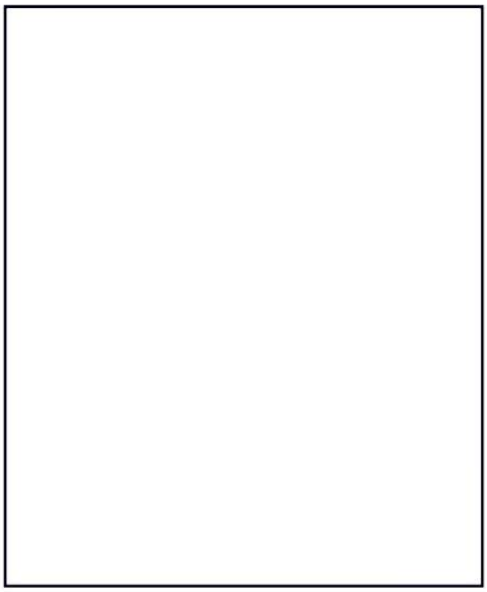

चारित्र चंद्रिका, वात्सल्यमूर्ति

गणिनी आर्यिका राजश्री माताजी

जन्म	–	17 मार्च, 1961 रायपुर (छत्तीसगढ़)
क्षुल्लिका दीक्षा	–	वर्ष– 1984, छिंदवाड़ा (मध्यप्रदेश)
आर्यिका दीक्षा	–	19 अप्रैल, 1987 श्योपुरकलाँ (ग्वालियर)
गणिनी पदारोहण	–	17 फरवरी, 1997 अहमदाबाद (गुजरात)
समाधि	–	7 मई, 2007 औरंगाबाद (महाराष्ट्र)

94

श्री धर्मतीर्थ प्रकाशन

पोस्ट कचनेर गट नं. 11-12, जिला औरंगाबाद (महाराष्ट्र) द्वारा

आर्ष मार्ष संरक्षक, कवि हृदय, प्रज्ञायोगी, दिगम्बर जैनाचार्य

श्री गुप्तिनंदी गुरुदेव ससंघ का प्रकाशित साहित्य

1. श्री रत्नत्रय विधान
2. श्री रत्नत्रय आराधना
3. श्री नवग्रह शांति विधान
4. श्री वृहद् गणधर वलय विधान
5. श्री लघु गणधर वलय विधान
6. श्री पंचकल्याणक विधान
7. कुन्थु पार्श्व गणधर पूजा
8. श्री बाहूबली पूजा
9. श्री नवग्रह शांति चालीसा (छोटी)
10. श्री नवग्रह शांति चालीसा (बड़ी)
11. श्री सम्मेदशिखर सिद्ध क्षेत्र पूजा
12. श्री रत्नत्रय संस्कार प्रवेशिका (भाग-1)
13. श्री रत्नत्रय संस्कार प्रवेशिका (भाग-2)
14. श्री रत्नत्रय भक्ति सरिता
15. सावधान (काव्य संग्रह)
16. श्री चिंतामणी पार्श्वनाथ विधान (कल्याण मंदिर विधान)
17. श्री त्रिकाल चौबीसी विधान (रोट तीज विधान)
18. श्री दीपावली पूजन
19. श्री सूर्यग्रह शान्ति विधान (सूर्य ग्रहारिष्ट निवारक श्री पद्मप्रभु आराधना)
20. श्री चन्द्रग्रह शान्ति विधान (चन्द्र ग्रहारिष्ट निवारक श्री चन्द्रप्रभु आराधना)
21. श्री मंगलग्रह शान्ति विधान (मंगल ग्रहारिष्ट निवारक श्री वासुपूज्य आराधना)
22. श्री बुधग्रह शान्ति विधान (बुध ग्रहारिष्ट निवारक श्री शांतिनाथ आराधना)
23. श्री गुरुग्रह शान्ति विधान (गुरु ग्रहारिष्ट निवारक श्री आदिनाथ आराधना)
24. श्री शुक्रग्रह शान्ति विधान (शुक्र ग्रहारिष्ट निवारक श्री पुष्पदंत आराधना)
25. श्री शनिग्रह शान्ति विधान (शनि ग्रहारिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ आराधना)
26. श्री राहूग्रह शान्ति विधान (राहू ग्रहारिष्ट निवारक श्री नेमिनाथ आराधना)
27. श्री केतुग्रह शान्ति विधान (केतु ग्रहारिष्ट निवारक श्री पार्श्वनाथ आराधना)

95

28. श्री विद्या प्राप्ति विधान
29. श्री विजय पताका विधान
30. श्री सर्वसिद्धी विधान
31. श्री भक्तामर विधान
32. श्री 96 क्षेत्रपाल विधान
33. श्री एकीभाव विधान
34. श्री तीस चौबीसी विधान
35. श्री कुन्थुगिरी पूजा
36. श्री चन्दन षष्ठी व्रत पूजा
37. श्री चन्द्रप्रभु आराधना
38. वात्सल्यमूर्ति (प.पू. ग.आ. राजश्री माताजी की स्मारिका)
39. श्री पंचमेरु, सोलहकारण, दशलक्षण विधान
40. लघु रत्नत्रय विधान
41. श्री श्रुत स्कन्ध विधान
42. श्री शांतिनाथ विधान
43. श्री विषापहार विधान
44. श्री रविव्रत विधान
45. श्री महावीर विधान
46. श्री नंदीश्वर विधान
47. महासती चंदनबाला
48. महासती मनोरमा
49. महासती अंजना
50. श्री चन्द्रप्रभ विधान

सी.डी.

1. श्री सम्मेदशिखर सिद्ध क्षेत्र पूजा (सी.डी.)
2. श्री रत्नत्रय आराधना व महाशांति धारा (डी.वी.डी.)
3. श्री नवग्रह शांति चालीसा (सी.डी.)
4. श्री बाहुबली पूजा (सी.डी.)
5. ये नवग्रह शांति विधान है (सी.डी.)
6. गुप्तिनंदी गुणगान (सी.डी.)
7. वात्सल्यमूर्ति माँ राजश्री (डी.वी.डी.)
8. मेरे पारस बाबा (डी.वी.डी,)
9. देहरे के चन्दा बाबा (एम.पी. 3)
10. श्री कुन्थु महिमा (डी.वी.डी.)
11. कनकनंदी गुरुदेव तुम्हारी जय हो (एम.पी.3)
12. गुप्तिनंदी अभिवन्दना (डी.वी.डी.)
13. जयति गुप्तिनंदी डाक्यूमेन्ट्री (डी.वी.डी.)
14. गुप्तिनंदी हिट्स (एम.पी.3)

96